श्री श्रीष चन्द्र दीक्षित

मुख्य परामर्षदाता
पूर्व सांसद व पूर्व फलिस महानिदेषक

श्री भारतेन्दु प्रकाष्ठा सिंघल

राष्ट्रीय प्रधाान
पूर्व सांसद) राज्य सभा) व पूर्व फलिस महानिदेषक

मे . ज .) से – नि .) विष्वास स . जोगलेकर
राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधाान

संपादक
प्रो0 सतीष चन्द्र
संपादक मंडल

डॉ महेष्ठा चन्द्र

देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाधयाय
प्रो0 श्री धार पन्त, डॉ0 रामषरण गौड़

प्रकाषक व मुद्रक
देवेन्द्र मित्तल) उपप्रधाान)
प्रकाषन स्थान
3308, सेक्टर–डी–3 वसंत कुंज,
नई दिल्ली – 110070

SUBSCRIPTION RATE

Inland	:	Life Rs. 800/-
		Annual 100/-
Overseas	:	Life US$ 100
		Annual US$ 10
Per copy	:	£1 $1.50, IRs 15

ADVERTISEMENT TARIFF

Outer Cover	**:**	**Rs.**	**15000/-**
Inner Cover	**:**	**Rs.**	**12,000/-**
Full Page	**:**	**Rs.**	**10,000/-**
Half Page	**:**	**Rs.**	**5,000/-**

Payable by MO/Bank Draft/Crossed Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
3308- Sector-D, Vasant Kunj,
New Delhi-110070

एक्सेलप्रिन्ट, सी–36, फ्लैटिड फैक्टरीज़ कॉम्पलैक्स, झण्डेवालान्, नई दिल्ली–110 055

गौरव घोष

G A U R A V G H O S H

BI-MONTHLY द्विमासिक

BIK-MONTHLY

वर्ष 9 अंक 2 विषय सूची फाल्गुन चैत्र 2065.66 वि मार्च 2009

संपादकीय आवरण 2 मनु

मनु महाराज को समझने में भूल तो नहीं हो रही 4

गाय के गोबर से कागज़ बनाने में सफलता *-मुजफ्फर हुसैन* 9

भारतीय संस्कृति 9

बेमेल संस्कृति की समस्याएं *-डॉ. विशेष गुप्ता* 10

परिवारों को जोड़ने की पहल 12

दहेज प्रताड़ना कानून महिलाओं के लिए अभिशाप ! *13*

अतीत से अलग अनुभव (होलब्रूक की पाकिस्तान यात्रा) *-कैमिला हयात* 13

वैचारिक विद्वेष का नया रूप *-तरुण विजय* 14

मकसद वाली दोस्ती *-नफीस अहमद* 15

उपराष्ट्रपति को बस मुस्लिमों की चिंता-सेकुलर सरपरस्ती की हद 16

हिन्दू राष्ट्रवादी हो सकता है, उग्रवादी नहीं *-योगी आदित्यनाथ* 17

गुम हो रहे लाल, खौफजदा एनसीआर 19

भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनक्रांति की ज़रूरत : स्वामी रामदेव 20

मूर्तियों व स्मारकों का बजट 21

नो वेकेन्सी प्लीज़ ! 22

पाठकों के विचार 23

पुस्तक समीक्षा 25

***Review Article* - How did India lose its wealth and prosperity** 26

'Islamic Republic of Pakistan' by 2020 in India 30

Why Hindus are angry at Muslims in India? 31

Whose nation is this? ***-P. Ananthakrishan*** 33

Diary of Events, Select Articles and Comments 35

संपादकीय

आज के बड़े ज़मींदार हैं - वक्फ बोर्ड

सन् 712 ई. से लगभग 1780 ई. तक तूफानों की तरह हिन्दुस्थान में घुसने वाले मुस्लिम आक्रमणकारियों ने भारी मात्रा में लूट का माल इकट्ठा किया, हिन्दुओं की संपत्ति पर ज़बरदस्ती कब्ज़े किए। लूट का माल जो सोने-चाँदी और हीरे जवाहरात के रूप में था, वे अपने देशों को ले गए, किन्तु संपत्ति जो यहाँ हिन्दुओं से छीनी गई, वह संपत्ति वक्फ के रूप में जमा हुई और अब वह अकूत संपत्ति वक्फ बोर्डों के कब्ज़े में है। इस बारे में भारत की विदेश सेवा से सेवानिवृत्त और पूर्व सांसद् सैयद शहाबुद्दीन ने '**जनसंघ टुडे**' (मासिक पत्रिका) के संपादक को अपने 13 नवम्बर 2008 के पत्र में जो डी-250 अबुल फज़ल एन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली से भेजा गया है, यह लिखा है :-

"यह हो सकता है कि मुसलमान शासकों ने अपने शत्रु हिन्दुओं की भूमि और संपत्तियों पर कब्ज़ा किया हो और उसे अपने हिमायती मुसलमानों में बाँट दिया हो, किन्तु ऐसी संपत्तियां यथा तथ्य वक्फ में तबदील नहीं हुई होंगी। वे निजी संपत्तियां रहती हैं, एक निजी संपत्ति वक्फ की परिभाषा के अंतर्गत तब ही आती है यदि उसका स्वामी उसे अल्लाह को ऐसे प्रयोजन के लिए समर्पित कर दें जो इस्लाम में धर्मार्थ रूप में मान्य हों।"

उपर्युक्त कथन से यह पता चलता है कि वक्फ की संपत्तियां/भूमि आदि उन्हें सीधे प्राप्त नहीं हुई होंगी बल्कि हिन्दुओं से लूट के बाद मुसलमानों में उन्हें बाँटा गया जो बाद में उनके वारिसों (उत्तराधिकारियों) द्वारा वक्फ को हस्तांतरित कर दी गई होंगी।

इस विषय में 'जनसंघ टुडे' में यह खुलासा किया गया है कि ये वक्फ ऐसे संग्रहालय हैं जहाँ आक्रमणकारियों के समूहों द्वारा लूटी गई संपत्तियां और माल जमा किए गए हैं। (मार्च 2009)

उल्लेखनीय है कि सन् 1924 ई. में **तुर्की गणतंत्र** में वक्फ मंत्रालय को निरस्त कर दिया गया और इसका अधिकार सामान्य निदेशक मंडल अथवा पंथनिरपेक्ष राज्य प्रशासन द्वारा ले लिया गया। **मिस्र में** मोहम्मद अली ने सबसे पहले कृषि वक्फों को ज़ब्त कर लिया और लाभार्थियों को मुआवज़ा दिया गया। **रूस में** भी रूसी क्रांति के पश्चात् वक्फों की संपत्ति को ज़ब्त कर लिया गया और उसे राज्य की संपत्ति घोषित किया गया (*देखिए, जनसंघ टुडे, मार्च 2009, पृष्ठ-13*)

सांस्कृतिक गौरव संस्थान की ओर से प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को भेजे गए दिनांक 6 अगस्त 2008 के पत्र में निम्नलिखित आग्रह किया गया है :-

यह सर्वविदित है कि भारत में वक्फ बोर्ड/बोर्डों के नाम से अवांछित संस्थाएं बनी हुई है जिनके कब्ज़े में लाखों एकड़ भूमि विभाजित हिन्दुस्थान (यानि भारत देट इज़ इंडिया) की है। कृषि भूमि की भारी कमी के फलस्वरूप इस बुरे हालात में यह ज़रूरी है कि वक्फ बोर्डों के कब्ज़े की भूमि का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाए और गरीब किसानों को, जिनके पास खेती की भूमि नहीं है खेती के लिए यह भूमि दे दी जाए और साथ-साथ वक्फ बोर्डों को मनसूख कर दिया जाए ताकि भविष्य में देश में इस प्रकार की संस्था खड़ी न हो और इस प्रकार के भू-माफियों का कब्ज़ा समाप्त हो जाए।

अपुष्ट सूचनाओं के अनुसार भारत में अधिकांश राज्यों में स्थापित वक्फ बोर्डों के पास लगभग 6 लाख एकड़ भूमि है। प्रश्न यह उठता है कि यह भूमि ये वक्फ बोर्ड कहाँ से लाए ? स्पष्ट है कि यह भूमि राष्ट्र की संपत्ति है और वक्फ बोर्डों के नाजायज़ कब्ज़े में है। स्वाधीनता और भारत के विभाजन के बाद जागीरदारी और ज़मींदारी के उन्मूलन के साथ ही वक्फ संपत्ति का भी अधिग्रहण स्वत: ही हो जाना चाहिए था, क्योंकि वक्फ हिन्दुओं के अपमान के प्रतीक हैं, जिन्हें किसी भी दशा में सहन नहीं किया जाना चाहिए।

राजेन्द्र सच्चर समिति की नवम्बर 2006 में प्रस्तुत रिपोर्ट में निम्नलिखित आँकड़े दिए गए हैं, जो चौंकाने वाले हैं और किसी भी लोकतंत्र के प्रति ईमानदार सरकार को ये संपत्तियां तत्काल अधिग्रहण कर लेनी चाहिएं।

राज्य	**संपत्तियों की संख्या**	**बही मूल्य (अरबों रुपये में)**
पश्चिम बंगाल	1,48,200	160
उत्तर प्रदेश	1,22,839	152
केरल	36,500	1356
आंध्र प्रदेश	35,703	81.35
कर्णाटक	28,731	पता नहीं
महाराष्ट्र	23,566	41.85
गुजरात	22,485	60
योग	**4,90,021**	**5468.21 अरब रु.** (अन्य राज्यों सहित)

(देखिए :- जनसंघ टुडे, मासिक, दिल्ली, मार्च 2009, पृष्ठ-9)

वक्फ संपत्तियों का क्षेत्रफल लगभग 6 लाख एकड़ होने का आकलन किया गया है।

सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार वक्फ संपत्तियों का बाज़ार मूल्य केवल दिल्ली में 6 हज़ार करोड़ रुपयों से भी अधिक है।

यह भेदभाव का विचित्र नमूना है जहाँ हिन्दुओं के धर्मस्थानों/मंदिरों की न केवल भूमि पर बल्कि चढ़ावे पर भी राज्य सरकारों ने कब्ज़े कर लिए हैं। इसकी तुलना मध्यपूर्व काल में मुसलमान आक्रमणकारियों के द्वारा की गई लूट से क्यों न की जाए?

संपादक

भारतीय जीवन मूल्य

मनु महाराज को समझने में भूल तो नहीं हो रही

-महादेव

महर्षि मनु हमारे इतिहास के ऐसे महानायक हैं जिन्होंने मानव जीवन की महत्ता को प्रकट करते हुए हमारे लिए ऐसे मूल्यवान् सूत्र दिए जिन पर चलकर हम अपनी चतुर्दिक उन्नति करते हुए समाज और देश की उन्नति की दिशा में भी विधिवत् अग्रसर हो सकते हैं। उन्होंने धर्म की सही-सही व्याख्या करते हुए उसे व्यक्ति की व्यावहारिकता के साथ जोड़ने का स्तुत्य प्रयास किया है। इसीलिए उन्हें संसार के समस्त बुद्धिजीवियों ने न केवल सराहा है बल्कि उनके द्वारा दिए गए सूत्रों को मानव मूल्यों की स्थापना के लिए अत्यधिक उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण एवं अनुकरणीय माना है। इसे मानव जाति का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि कुछ लोगों ने अपनी अल्पज्ञता के कारण मनु द्वारा प्रस्तुत सामाजिक एवं आध्यात्मिक नियमों और व्यवस्थाओं को गहराई से न समझकर उनका विरोध करना आरंभ कर दिया है। आजकल बहुत ही उपहासात्मक तथा व्यंग्यात्मक शब्दों में 'मनुवाद' शब्द का प्रयोग कुछ लोगों द्वारा किया जाता है तथा अपने राजनैतिक या अन्य लक्ष्यों को प्रात करने के लिए मनु के बारे में अनेक प्रकार की भ्रांतियां फैलाकर व्यक्ति-व्यक्ति में विद्वेष की भावना पैदा करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। पाठकों की जानकारी के लिए हम मनुवाद शब्द का अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि वे इस तथ्य से परिचित हो सकें कि क्या यह शब्द वास्तव में ही हेय और त्याज्य है? **मनुवादी व्यवस्था का अर्थ है -**

'गुण-कर्म-योग्यता के श्रेष्ठ मूल्यों के महत्त्व पर आधारित विचारधारा के अनुरूप व्यवस्था' और गैरमनुवादी व्यवस्था का अर्थ है - 'अगुण-अकर्म-अयोग्यता के अश्रेष्ठ अवमूल्यों पर आधारित अव्यवस्था'। अब यह बात अत्यधिक चिन्तनीय हो जाती है कि मनु का विरोध करने वाले आखिर समाज को कहाँ ले जाना चाहते हैं? जिन लोगों ने भी मनु का विरोध किया या कर रहे हैं उसका कारण मनु या उनके द्वारा प्रणीत मनुस्मृति नहीं है बल्कि अपने-अपने पूर्वाग्रहों, मनु के दर्शन का गलत ढंग से कार्यान्वयन तथा अपनी अलग पहचान बनाए रखने की सतही भूख ही मनु के विरोध का मुख्य कारण लगता है।

जो लोग मनु के दर्शन की गहराई तथा वास्तविक स्वरूप को समझ सकने की सामर्थ्य रखते हैं उनके द्वारा मनु महाराज को मानव मूल्यों तथा सामाजिक समरसता और श्रेष्ठता के सूत्र देने वाले प्रथम प्रवक्ता के रूप में आदर दिया जाता है। इनके विचारों की उपयोगिता व श्रेष्ठता के बारे में यहाँ तक कहा गया है **'मनुर्वै यत्किंचावदत् तद् भैषजम्' (तैत्तिरीय संहिता)** अर्थात् मनु ने जो कुछ कहा है वह मानवों के लिए भेषज-औषध के समान कल्याणकारी एवं गुणकारी है। हम देखते हैं कि संहिता ग्रंथों, ब्राह्मण ग्रंथों, वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत आदि ग्रंथों ने मनु को प्रमाण माना है। आचार्य बृहस्पति जी ने तो यहाँ तक कहा है कि वेदार्थों के अनुसार रचित होने के कारण सब स्मृतियों में मनुस्मृति ही सबसे प्रधान एवं प्रशंसनीय है...मनुस्मृति के समक्ष सभी शास्त्र निस्तेज व प्रभावहीन होते हैं। महाभारत का कथन है कि ब्राह्मण ग्रंथ, मनु प्रतिपादित धर्म, सांगोपांग चिकित्सक और धार्मिक विद्वानों की आज्ञा से सिद्ध कार्य-इन चारों का हेतुशास्त्र का आश्रय लेकर कुतर्क आदि द्वारा खण्डन नहीं करना चाहिए। मनुजी का कथन है कि श्रुति और स्मृति ग्रंथों की किसी भी अवस्था में आलोचना नहीं करनी चाहिए क्योंकि उन्हीं से धर्म की उत्पत्ति हुई है। जो व्यक्ति कुतर्क आदि का सहारा लेकर उनकी अवमानना व निन्दा करता है, श्रेष्ठ लोगों को चाहिए कि उसे समाज से बहिष्कृत कर दें, क्यांकि वेद की निन्दा करने वाला ऐसा व्यक्ति नास्तिक है। महाकवि अश्वघोष, याज्ञवल्क्य, शंकराचार्य, शबरस्वामी, गौतम, वशिष्ठ, आपस्तम्ब, आश्वलायन, जैमिनि, बोधायन तथा आचार्य चाणक्य आदि महापुरुषों ने मनुस्मृति की श्रेष्ठता को एक स्वर से स्वीकार किया है। आधुनिक काल में महर्षि दयानंद सरस्वती सहित समस्त आचार्यों तथा दार्शनिकों ने मनुस्मृति को धर्म का आधार माना है।

अपनी गुणवत्ता के आधार पर मनुस्मृति का विदेशों में भी पर्याप्त स्वागत हुआ है। इस संबंध में डॉ0सुरेन्द्र कुमार जी लिखते हैं कि ब्रिटेन, अमेरिका तथा जर्मनी से प्रकाशित 'इन्साइक्लोपीडिया' में मनु को मानव जाति का आदि पुरुष आदि धर्मशास्त्रकार, आदि विधिप्रणेता, आदि न्यायशास्त्री और आदि समाज व्यवस्थापक के रूप में वर्णित किया गया है। मैक्समूलर, ए.बी.कीथ, लुईसरेना, पी.थॉमस तथा मैक्डानल आदि पाश्चात्य लेखकों ने मनुस्मृति को धर्मशास्त्र के साथ 'लॉ-बुक' मानते हुए उसमें निहित विधान को सार्वभौमिक, सार्वजनीन और सबके लिए कल्याणकारी माना है। भारतीय सुप्रीमकोर्ट के तत्कालीन जज सर विलियम जोन्स ने भारतीय विवादों के निर्णय में मनुस्मृति की अपरिहार्यता को देखते हुए संस्कृत सीखी और मनुस्मृति को पढ़कर उसका संपादन किया। **जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्से ने तो यहाँ तक कहा है कि 'मनुस्मृति बाइबल से उत्तम ग्रंथ है बल्कि उससे बाइबल की तुलना करना ही पाप है।'** अमेरिका से प्रकाशित इन्साइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइंसिज़, कैम्ब्रिज़ हिस्ट्री ऑफ इंडिया, कीथ रचित 'हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिट्रेचर', भारत रत्न पी.वी.काणे रचित 'धर्मशास्त्र का इतिहास', डॉ. सत्यकेतु रचित 'दक्षिण-पूर्वी और दक्षिण एशिया में भारतीरय संस्कृति' आदि पुस्तकों में विदेशों में मनुस्मृति के प्रभाव और प्रसार का जो विवरण दिया गया है, उसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय अपने अतीत पर गर्व कर सकता है। बाली द्वीप, बर्मा, फिलीपीन, थाईलैण्ड, चम्पा (दक्षिण वियतनाम), कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, मलयेशिया, श्रीलंका तथा नेपाल आदि देशों से प्राप्त शिलालेखों और उनके प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि वहाँ प्रमुखत: मनु के धर्मशास्त्र पर आधारित-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था रही है। मनु के विधानों को सर्वोच्च महत्व दिया जाता था और उन्हीं के अनुसार न्याय होता था।

स्वतंत्रता के बाद भी कुछ लोगों की मानसिकता वैसी ही रही जैसी अंग्रेज़ों ने भारतीय संस्कृति के प्रति हेय भावना निर्माण करके की थी और ऐसे लोगों ने अपने राजनैतिक व सामाजिक लाभ उठाने के लिए मनुवादी और गैरमनुवादी नाम से भारतीयों को बांटने का प्रयास किया। अब क्योंकि उन्हें अपनी इस कुत्सित भावना को एक विशाल फलक व आधार देना था इसलिए वेद व मनुस्मृति आदि ग्रंथों में दोष निकाले जाने का प्रयास किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि

मनुस्मृति का विरोध पूर्वाग्रहों, राजनैतिक व अन्य सामाजिक स्वार्थों तथा मनु की मूल भावना को न समझने के कारण हुआ है। इसके साथ ही विरोध करने वालों ने मनुस्मृति का स्वयं गहन अध्ययन नहीं किया बल्कि उसे मात्र सतही तौर पर ही देखा या लोगों से सुनी-सुनाई बातों पर ही विश्वास कर लिया।

यहाँ पर हम मनु जी पर लगाए गए केवल एक ही आक्षेप के बारे में चर्चा करना चाहेंगे। वह है कि मनु जी महाराज ने ही जाति-पांति व ऊँच-नीच का भेदभाव पैदा किया है। वास्तविकता यह है कि मनु जी ने जिस वर्ण-व्यवस्था का वर्णन अपनी मनुस्मृति में किया है वह उनकी अपनी बनाई हुई व्यवस्था नहीं है बल्कि प्राचीन ग्रंथों के आधार पर ही उन्होंने इस व्यवस्था को सामाजिक उन्नति तथा समरसता के लिए अपने ग्रंथ में प्रमुखता के साथ स्थान दिया है और उनकी इस व्यवस्था में छुआछूत या किसी वर्ण विशेष की निन्दा आदि का कोई प्रावधान नहीं है। कुछ लोगों ने शूद्रों आदि के प्रति समसामयिक विषमताओं को देखकर तथा इसका दोष मनुस्मृति पर मढ़कर घोर प्रतिक्रियावादी बनकर ही मनुस्मृति का विरोध किया है। श्री फुले जी अपनी पुस्तक 'गुलामगिरि' में ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत् पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि ब्राह्मण को मुख से जन्म देने वाला ब्रह्मा का मुख ऋतु (आर्तव) काल में चार दिन अलग-अलग बैठता था या भस्म लगाकर घर के कामकाज करता था, इस विषय में मनु ने कुछ लिखा है या नहीं। ब्राह्मण को यदि व्यक्ति का मुख (श्रेष्ठ) होने की उपमा दे दी तो इतनी सी बात तो फुले जी को समझनी चाहिए थी कि मुख से व्यक्ति का जन्म नहीं होता है, यह तो ग्रंथकार ने ब्राह्मण अर्थात् ज्ञान की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए उपमा दी है। संभवतः श्री अम्बेडकर जी भी इसी गलतफहमी के शिकार हुए हैं अन्यथा उन जैसा बुद्धिजीवी कदापि न लिखता - ब्राह्मण को शूद्र के स्थान पर बिठलाया जाएगा, तभी मनुप्रणीत निर्लज्ज तथा विकृत मानवधर्म का निवारण हो सकता है। यदि अम्बेडकर जी ब्राह्मण और शूद्र का सही भाव समझते तो वे कहते कि हमें शूद्र को भी ब्राह्मण बनाने का प्रयास करना अपेक्षित है।

हमारा यह दृष्टिकोण रहना चाहिए कि हम मानवतावाद के आदर्श को सदा सामने रखें जिससे व्यक्ति-व्यक्ति के बीच वैर-वैमनस्य के स्थान पर आपसी प्रेम स्थापित हो सके। इसी से सामाजिक समरसता स्थायित्व पा सकती है। इस दृष्टिकोण से मनुस्मृति को जलाना, मनु की निन्दा करना या उनकी मूर्ति आदि हटाना दलितों की स्थति को संवारने की दिशा में कोई समाधान नहीं है बल्कि इससे सामाजिक समरसता और व्यवस्था के और अधिक चरमराने की संभावना है। इसका समाधान यह है कि हम मनुस्मृति की उस आदर्श वर्ण-व्यवस्था को मूलरूप से समझें एवं उसका कार्यान्वयन पूरी ईमानदारी के साथ करें। कहीं भी किसी बात पर विवाद हो तो उसे सप्रेम बातचीत के द्वारा हल किया जाए। दुःख की बात है कि इस दिशा में किसी ने भी प्रयास नहीं किया। श्री अम्बेडकर जी ने जन्मना जाति-पांति, ऊँच-नीच , छूत-अछूत जैसी कुप्रथाओं के कारण अपने जीवन में जिन उपेक्षाओं, असमानताओं और अन्यायों को भोगा था, उस स्थिति में कोई भी स्वाभिमानी शिक्षित वही करता जो उन्होंने किया किन्तु मनु और मनुस्मृति को गंभीरता एवं पूर्णता से समझे बिना, पूर्वाग्रहों के कारण उन्होंने मनु के विषय में जो व्यवहार किया, वह सर्वथा युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने मनु संबंधी समस्त अध्ययन-विश्लेषण अंग्रेज़ी भाषा में लिखी आलोचनाओं के माध्यम से ग्रहण किया है, **अतः वे मौलिक-प्रक्षिप्त आदि पहलुओं, श्लोकों के प्रसंगों आदि पर विचार नहीं कर सके। जो अंग्रेज़ी समालोचनाओं में पढ़ा, वही धारणा बन गई** अन्यथा उन जैसा प्रबुद्ध व्यक्ति मनु और मनुस्मृति का इतना अविचारित विरोध नहीं करता।

मनुजी ने प्राचीन ग्रंथों के आधार पर वर्ण-व्यवस्था समाज की कार्यप्रणाली को सुचारु-रूप से चलाने के लिए की थी। इसलिए वे चारों वर्णों के कर्मों का निर्धारण करते हुए कहते हैं - **'सर्वस्यास्य तु सर्गस्य स महाद्युतिः मुखबाहूरूपज्जानां पृथक्कर्माण्यकल्पयत्।। (1-87)** अर्थात् समस्त संसार की गुप्त (सुरक्षा), व्यवस्था एवं समृद्धि के लिए महातेजस्वी परमात्मा ने मुख, बाहु, जंघा और पैर की तुलना से इन चारों वर्णों के पृथक्-पृथक् कर्म बनाए। **'वर्ण' शब्द वास्तव में इस व्यवस्था को कर्माधारित सिद्ध करता है।** निरुक्त के अनुसार 'वर्णो वृणोतेः' (2-1-4) अर्थात् कर्मानुसार जिसका वरण किया जाए वह 'वर्ण' है। आगे विस्तार से मनु जी ने चारों वर्णों के कर्मविधान का खुलासा करते हुए लिखा है कि - 'पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना तथा दान लेना और देना ये ब्राह्मण (1-88) के कर्म बताए हैं। दीर्घ ब्रह्मचर्य से सांगोपांग वेदादि शास्त्रों को यथावत् पढ़ना, अग्निहोत्र आदि यज्ञों का करना, सुपात्रों को विद्या, सुवर्ण

आदि और प्रजा को अभय दान देना, प्रजाओं का पालन करना, विषयों में अनासक्त होकर सदा जितेन्द्रिय रहना ... आदि (1-89) क्षत्रिय के कर्म बताए हैं। गाय आदि पशुओं का पालन-वर्धन करना, विद्या-धर्म की वृद्धि करने-कराने के लिए धनादि का व्यय करना, वेदादि शास्त्रों को पढ़ना, सब प्रकार के व्यापार करना और खेती करना (1-90) ये वैश्य के कर्म हैं। जिसको पढ़ने से विद्या न आ सके, शरीर से पुष्ट, सेवा में कुशल हो उस शूद्र के लिए इन तीन वर्णों की निन्दा से रहित प्रीति से सेवा करना (1-91) निर्धारित किया है। इस व्यवस्था में कहीं भी शूद्र को अछूत कहने या अपमानित करने का निर्देश मनु जी ने नहीं किया है बल्कि ऐसे पढ़ने से भी न पढ़ पाने वाले व्यक्ति के लिए बहुत ही सुंदर व्यवस्था दी है कि वह चारों वर्णों की सेवा करके ही समाज और राष्ट्र की उन्नति में अपना सहयोग दे। किसी भी पद या कार्य के लिए योग्यता को तो प्राथमिकता दी ही जाती है तथा दी जानी भी चाहिए। हम कार्यालयों में ही देखते हैं कि एक व्यक्ति तो मुख्य अभियंता के पद पर कार्य करता है और दूसरा चपरासी का काम करता है। अब चपरासी यदि यह कहे कि मेरे साथ अन्याय हुआ है, मुझे आप मुख्य अभियंता के पद पर नियुक्त क्यों नहीं करते तो उसे यह कहकर ही तो समझाया जा सकता है कि भाई इस व्यक्ति की नियुक्ति इसकी योग्यता के आधार पर हुई है। तुम्हारी जो योग्यता है तुम्हें भी उसी प्रकार का कार्य दिया गया है अत: तुम विनम्रता के साथ इस कार्यालय के स्टाफ की सेवा करो। साधारण शब्दों में हम मनुजी की वर्ण-व्यवस्था को इसी रूप में समझ सकते हैं।

एक भ्रांति इस संबंध में यह भी कुछ लोगों को हो गई है कि यह वर्ण-व्यवस्था जन्मगत है जबकि यह व्यवस्था व्यक्ति की योग्यता व कर्म के आधार पर की गई है। जाति-व्यवस्था और वर्ण-व्यवस्था दो अलग-अलग तथा दो विरोधी बातें हैं। वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म और जाति-व्यवस्था का आधार जन्म है। इन दोनों का समानार्थ प्रयोग लोगों में भ्रांति पैदा करने के लिए कुछ स्वार्थी लोगों द्वारा कालान्तर में किया गया है। **मनु महाराज ने इस प्रसंग में कहीं भी जाति शब्द का प्रयोग नहीं किया है।** विचारणीय बात है कि यदि मनु महाराज ने जन्म व जाति के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का विवेचन करना था तो उनके द्वारा ये नाम भर ही लिख देना पर्याप्त था, उनके कर्म विभाजन की क्या जरूरत थी ? क्योंकि उन्होंने सबके लिए पृथक्-पृथक् कर्मों का निर्धारण किया है **अत: वे वर्ण-व्यवस्था को कर्म के आधार पर मानते हैं न कि जन्म के आधार पर ।** यही कारण है कि उनके ग्रंथ में ऐसे कितने ही श्लोक (10-65/2-37, 40, 103, 168/4-254/9-335) हैं **जहाँ निकृष्ट कर्मों के कारण द्विजों को शूद्र तथा श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर शूद्र को उच्चवर्ण की प्राप्ति का विधान है।** इतिहास में ऐसे बहुत से प्रमाण हैं जहाँ कर्मों के आधार पर व्यक्तियों को ब्राह्मण से शूद्र व शूद्र से ब्राह्मण बनना पड़ा है। **बुद्धिजीवियों से हमारा निवेदन है कि वे इस रहस्य पर भी चिंतन करें कि आज भी चारों वर्णों में समान गोत्र पाए जाते हैं। जो इस बात का प्रमाण हैं कि एक ही गोत्र के व्यक्तियों को अपने गुण-कर्म और योग्यता के आधार पर अलग-अलग वर्णों में जाना पड़ा।**

इस बात का कोई एक भी प्रमाण नहीं दे सकता है कि मनु जी ने शूद्र को कहीं पर भी अस्पृश्य कहा हो। इसके विपरीत उन्होंने शूद्र को निन्दित व घृणित मानने के स्थान पर उसे शुचि, उत्तम तथा उत्कृष्ट आदि शब्दों से सम्बोधित किया है। उन्होंने अपराधों के लिए ब्राह्मण को सबसे अधिक दण्ड तथा शूद्र को सबसे कम दण्ड देने का विधान किया है। उसे गुलाम व दास आदि न मानकर उसे पूरा वेतन देने का भी आदेश दिया है। पता नहीं क्यों और कैसे राजनैतिक आधार पर अछूत, दलित, पिछड़ी और जनजाति आदि के लिए शूद्र शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है जबकि मनु जी ने शूद्र को इस कोटि में नहीं रखा है। कुछ लोगों ने अपने पूर्वाग्रहों, अधकचरे अध्ययन तथा राजनैतिक एवं सामाजिक लाभ उठाने के लिए मनु पर मनमाने आरोप लगाने का अपराध किया है। हम एक बार पुन: शूद्र के बारे में मनु जी द्वारा की गई परिभाषा की ओर अपने पाठकों का ध्यान दिलाना चाहते हैं। **'ब्राह्मण : क्षत्रियो वैश्य: त्रयो वर्णा: द्विजातय:। चतुर्थ : एकजातितस्तु, शूद्र: नास्ति तु पंचम: (10-4) अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीनों वर्णों को द्विजाति कहते हैं क्योंकि इनका दूसरा विद्याजन्म होता है।** चौथा वर्ण एक जाति - केवल माता-पिता से ही जन्म लेने वाला और विद्याजन्म प्राप्त न करने वाला शूद्र है। इन चारों वर्णों के अतिरिक्त और कोई वर्ण नहीं है। स्कन्दपुराण में कहा गया है कि 'जन्मना जायते शूद्र: संस्काराद् द्विज उच्यते। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, उपनयन आदि संस्कार में दीक्षित होकर ही द्विज बनता है। मनु जी ठीक यही बात कह रहे हैं कि जन्म से कोई भी ब्राह्मण आदि नहीं बल्कि

जिनका ब्रह्म जन्म अर्थात् विद्याजन्म रूपी दूसरा जन्म होता है, वे 'द्विजाति' ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हैं तथा जिनका ब्रह्म जन्म नहीं होता अर्थात् पढ़-लिख नहीं पाता वह शूद्र है। ज्ञान, विद्या और संस्कारों से अपने आपको परिष्कृत व परिपक्व कर लेने वाला व्यक्ति तो द्विज है जो जानबूझकर या मंदबुद्धि व अयोग्य आदि होने के कारण विद्याध्ययन आदि नहीं कर पाता है ऐसा अशिक्षित व असंस्कारी व्यक्ति ही शूद्र है। आज आवश्यकता इस बात की है कि जाति के नाम पर घृणा, द्वेष और अलगाववाद के बीज बोने के स्थान पर मनु की व्यावहारिक व वैज्ञानिक आदर्श वर्ण-व्यवस्था को समझना चाहिए और सामाजिक विद्वेष को समाप्त करने हेतु उसका ईमानदारी से प्रचार-प्रसार व क्रियान्वयन करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए, जिससे समाज और राष्ट्र का अभ्युदय हो ....

महादेव, सुंदरनगर, जिला-मण्डी, (हि.प्र.)

फार्म संख्या - IV (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	:	द्विमासिक
3. मुद्रक का नाम	:	देवेन्द्र मित्तल
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
4. प्रकाशक का नाम	:	देवेन्द्र मित्तल
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
5. पता	:	3308, सेक्टर-डी-3, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070
6. संपादक का नाम	:	प्रो. सतीश चन्द्र
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
पता	:	166, वसंत एन्क्लेव, राव तुलाराम मार्ग, नई दिल्ली -110 057
7. उन व्यक्तियों/संस्था का नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	सांस्कृतिक गौरव संस्थान डाक पेटी संख्या 5016, सेक्टर-5, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110 022

मैं, सविनय एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह. देवेन्द्र मित्तल

गाय के गोबर से कागज़ बनाने में सफलता

-मुजफ्फर हुसैन

भारत में गाय के गोबर से कागज़ बनाने के शोध का श्रेय डॉ.   अनुराधा नाम की एक युवती को जाता है। अनुराधा विशाखापट्टणम् की रहने वाली हैं। इन दिनों वह राजमुंद्री के एक महाविद्यालय में अध्यापन का काम कर रही है। आंध्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पुल्लाराव के मार्गदर्शन में अनुराधा ने इकोनॉमिक्स ऑफ एजुकेशन में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है। अनुराधा जी का कहना है कि जब विशाखापट्टणम् में उनकी भेंट डॉ. मदनमोहन बजाज से हुई, तो वे गाय के संबंध में सोचने लगीं। डॉ. बजाज ने अपने शाकाहार संबंधी व्याख्यान में भारतीय गायों की दुर्दशा का अत्यंत ही भावुक शब्दों में वर्णन किया। उन्होंने कहा कि जब तक गाय के साथ अर्थव्यवस्था नहीं जुड़ती, गाय का देश में उद्धार नहीं हो सकता है। ***XXXXX (छोड़ दिया गया भाग)*** गाय के गोबर में फाइबर होने के कारण डॉ. अनुरोधा ने सोचा कि यह कागज़ का कच्चा माल हो सकता है। फिर क्या था, उन्होंने गाय के गोबर के साथ अन्य रसायन और कुछ दूसरी वस्तुओं का मिश्रण किया। लगातार प्रयोग करने के बाद वे कार्ड बोर्ड बनाने में सफल हो गईं, लेकिन उनका उद्देश्य तो लिखने का कागज़ बनाना था, इसलिए वह अपने प्रयोग करती रहीं।

पहले पहल कागज़ टूट जाता था, लेकिन उसे जोड़ने का मार्ग भी उन्होंने खोज लिया। अब बाज़ार में उपलब्ध कागज़ जैसा उनका कागज़ बनकर तैयार हो गया। अब तक तो वे सारा काम हाथ से कर रही हैं। छोटी-बड़ी मशीनें जुटाकर उसका प्रयोग किया, लेकिन अब वे सोच रही हैं कि उसकी मशीनें मुझे मिल जाएँ, तो उसका उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जा सकता है। अनुराधा का कहना था कि पहला प्रयोग सफल होते ही नमूना मैंने डॉ. बजाज को भिजवा दिया। डॉ. अनुराधा का कहना है कि यदि काम बड़े पैमाने पर हुआ, तो एक दिन गाय का गोबर सौ रुपये किलो बिकेगा। इस क्रांति के पश्चात् गऊ माता देश की अर्थव्यवस्था का मज़बूत स्तंभ बन जाएगी। देश और दुनिया इस उपयोगी पशु को मरते दम तक अपने सीने से लगा कर रखेगी। कागज़ के लिए जब गोबर का उपयोग होने लगेगा, उस दिन सारा देश कहेगा यह गोबर नहीं वास्तव में गो वर है, जो हमें समृद्ध और संपन्न बनाएगा।

(नई दिल्ली से प्रकाशित 'राजधर्म' के फरवरी 2009 ई. के अंक में प्रकाशित लेख से साभार)

भारतीय संस्कृति

विश्वविख्यात संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति ही एकमात्र ऐसी संस्कृति है, जो सबसे प्राचीन होते हुए भी बहुत कुछ आज भी उसी रूप और परिवेश में चलती आ रही है जिसमें वह प्राचीन काल में कभी रही थी। भारतवर्ष के लोग आज भी अपनी उन्हीं प्राचीन जड़ों को सिंचित होकर पल्लवित और पुष्पित होते हुए अपनी संस्कृति के प्राचीन गौरव और महत्त्वपूर्ण स्थान को बनाए रखने में काफी मात्रा में समर्थ रहे हैं।

अभिप्राय

भारतीय संस्कृति का अभिप्राय समझने के लिए पहले 'संस्कृति' का परिवेश और उसकी परिभाषा को जानना समीचीन होगा -

परिवेश – व्याकरण की दृष्टि से 'संस्कृति' शब्द का निर्माण संस्कृत भाषा की 'कृ' धातु में सम् उपसर्ग और 'क्तिन' प्रत्यय लगाने से हुआ है, जिसका अर्थ 'संस्कारित' वस्तु या स्थिति से है, अर्थात् संस्कृति के अंतर्गत संस्कारित या सुधारी हुई वस्तु या स्थिति को रखा जा सकता है।

भारत के प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि – "जन्मना जायते शूद्र: संस्कारात् द्विज उच्यते" – जन्म से सभी व्यक्ति असंस्कारी होते हैं, संस्कारों से ही द्विज बनते हैं। बाइबल में भी ईसा मसीह का एक वाक्य आया है कि – "मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जब तक मनुष्य का दुबारा जन्म नहीं होता, वह परमात्मा के राज्य का दर्शन नहीं कर सकता।" बाइबल में दुबारा जन्म के उल्लेख का अर्थ कदाचित् पुनर्जन्म नहीं वरन् इसी जन्म में संस्कार संपन्न होने से है। (जॉन 3. 3–सेंटलूक–17.21–कल्याण के हिन्दू संस्कृति अंक से उद्धृत) अत: संस्कृति के परिवेश का मुख्य भाव वह शिक्षा–दीक्षा है जिससे मनुष्य का जीवन सुधरे और वह संस्कार संपन्न बने।

परिभाषा : जहाँ तक "संस्कृति" शब्द की परिभाषा का प्रश्न है, यह उल्लेखनीय है कि शब्दों की किसी एक निश्चित सीमा में बाँधकर इसकी व्याख्या कर पाना सदा से बोधक नहीं है, वह तो किसी भी देश, जाति या समाज की समस्त विरासतों और परंपराओं का बोधक है। इसीलिए वे सभी कार्य–व्यापार और वे सभी अभिव्यक्तियाँ, जिन्हें व्यक्ति या समाज अथवा जाति या देश सोचते रहे हैं या करते रहे हैं या रचते रह हैं, संस्कारित रूप से 'संस्कृति' के अंतर्गत आते हैं। यदि इसे एक ही वाक्य में स्पष्ट करना पड़े तो उसके लिए हमें यजुर्वेद के 7.14 को देखना होगा, जहाँ कहा गया है कि – "सा प्रथमा संस्कृति: विश्ववारा" अर्थात् देव प्रजापिता ने जिस सृष्टि की रचना की है, वह एक संस्कृति है। वह सबके लिए वरणीय है, अत: वह विश्ववारा है।" संस्कृत की एक पुरातन उक्ति में कहा गया है – 'सोऽम् आत्मा मनोमय: प्राणमय: वांग्मय: ...' – मन, प्राण और तत्त्वों की समष्टि ही मनुष्य है। मनुष्य ने विश्व के रंगमच पर विभिन्न क्षेत्रों में समय–समय पर जो मन से सोचा है, जो कर्म किया है और जो भौतिक माध्यमों से निर्माण किया है, वही उसकी संस्कृति है। किन्तु ज्ञान, कर्म और रचना को संस्कृति की कोटि में रखने के लिए आवश्यक है कि वे संस्कार संपन्न हों।

क्रमश: अगले अंक में

बेमेल संस्कृति की समस्याएं

–डॉ. विशेष गुप्ता

मंगलूर के एक पब में लड़कियों से बदसलूकी के बाद राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्रों में एक बहस छिड़ गई है। इस घटना की जहाँ चारों तरफ निंदा हुई है वहीं पब संस्कृति से जुड़ी बहस में कुछ प्रदेशों के मुख्यमंत्री भी कूद पड़े हैं। कर्नाटक के मुख्यमंत्री वी.एस.येदियुरप्पा का मत है कि वह अपने राज्य में पब संस्कृति नहीं पनपने देंगे। वहीं राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी मॉल में लड़के–लड़कियों के हाथ में हाथ डाले घूमने–फिरने की संस्कृति बंद करने के संकेत दिए हैं। दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने भी अपनी इतर राय स्पष्ट करते हुए लड़के–लड़कियों के बाहर जाने व घूमने की वकालत की है। ध्यान रहे कि इस बहस से वह युवा समूह बाहर है जो इसके केन्द्र में है। वर्तमान वैश्विक बाज़ार के विस्तार के संदर्भ में उस युवा वर्ग के सामाजिक मनोविज्ञान को या तो समझने का प्रयास नहीं किया जा रहा या जानबूझकर उसे इस पृष्ठभूमि से नदारद मान लिया गया है। इस बहस में उसकी स्वत: सहभागिता मानते हुए उस पर अपसंस्कृति का दोषारोपण किया जा रहा है। पब संस्कृति सांस्कृतिक निरंतरता का ही एक तत्व है जो बाजारवादी संस्कृति की कोख से जन्मा है। इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान में उदारीकरण के नाम पर एक प्रकार की पूंजीवादी संस्कृति विस्तार ले रही है। यह इस संस्कृति का विषाणु है जिसने भारतीय सांस्कृतिक ढांचे में विघटन लाकर यहाँ के परिवार, आचार–विचार, व्यवहार, शैली और परंपरा को निगलना शुरू कर दिया। वर्तमान में स्थिति यह है कि बच्चे, युवा व स्त्रियां इस वैश्विक संस्कृति का हिस्सा बनकर अत्याधुनिक फैशन, खान–पान व गीत–संगीत अपनाने को मजबूर हैं। वैश्विक स्तर की इस घातक गलाकाट होड़ में संस्कृति संक्रमण की पीड़ा के साथ में सनातन

मूल्यों के टूटन का दर्द व नए-पुराने मूल्यों से सामंजस्य न होने की वेदना भी देखी जा सकती है। कड़वी सच्चाई यह है कि संस्कृति के क्षेत्रों में सत्ता द्वारा नियंत्रण की सीमा हमेशा विवादास्पद रही है।

सुरुचि और कुरुचि की परिभाषाएं अधिनियमों द्वारा निर्धारित नहीं की जा सकतीं। श्लील और अश्लील की विभाजन रेखा समाज में सदा ही क्षीण रही है। सच यह है कि देश काल के संदर्भ में उचित और अनुचित की परिभाषा का आधार सांस्कृतिक होता है। आज जिस पब संस्कृति को भारतीय संस्कृति के खिलाफ कहने की मुहिम जारी है उसके संदर्भ में हमें स्मरण रखना चाहिए कि इस पब संस्कृति को विस्तार देने में हमने ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ यह तथ्य प्रस्तुत करना प्रासंगिक होगा कि आज वैश्विक आधार पर पनपने वाले बाजार प्रोफेशनल युवाओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। इन्हीं के बलबूते मुंबई, हैदराबाद तथा मैसूर जैसे शहर आईटी हब बनकर उभरे हैं। सिलिकॉन वैली कहे जाने वाले बेंगलूर की विश्व पटल पर पहचान भी इन्हीं टेक्नॉक्रेट युवाओं के जीतोड़ परिश्रम के कारण उभरी है। यह इसी का परिणाम रहा है कि ये सभी शहर भी पब संस्कृति के केन्द्र बन गए। एक ताकतवर भारत और एक खुशहाल भारत के बीच पब संस्कृति के रूप में पश्चिम के कुछ ऐसे मूल्य प्रवाहित हो गए जो भारतीय संस्कृति से बेमेल हैं। यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि यहाँ के आर्थिक उदारीकरण से उपजी समृद्धि से एक ऐसा वर्ग उभरकर सामने आया है जिसकी क्रय शक्ति से एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय बाजार भी विकसित हो रहा है। विदेशी कंपनियां भारत में और भारतीय कंपनियां विदेशों में अपना परचम लहरा रही हैं। यह उदारीकृत अर्थव्यवस्था के आदान-प्रदान का काल खंड है। हमारी पारंपरिक अर्थव्यवस्था की अपनी नैतिकताएं और मूल्य थे। अब नई उदार आर्थिक प्रणाली आई है तो इसकी अपनी नैतिकताएं और अपने-अपने तर्क हैं। अर्थव्यवस्था के बदलाव के साथ-साथ मान्य नैतिकताओं, सामाजिक मूल्यों व सामूहिक मन को जिस तरह से परिवर्तित व संवर्धित होना चाहिए था, वैसा नहीं हुआ। यही कारण है कि पब संस्कृति जैसे मुद्दे हमें परेशान कर रहे हैं। हमें पहले ऐसे मुद्दों को परिभाषित करते हुए सुलझाना पड़ेगा। पूर्ववर्ती मान्यताओं के हिसाब से जो अनैतिक था, हो सकता है कि वह वर्तमान आधार पर नैतिक लगने लगे और नई नैतिकता को हम अनैतिक के साँचे में ढालने लगें।

यह हमारे पारिवारिक और शैक्षिक समाजीकरण पर निर्भर करेगा कि हम संस्कृति के प्रयोग में उपभोग का कौन-सा स्वरूप अपनाते हैं? ज़रा गौर करें तो पता चलेगा कि मानवीय श्रम का जब मशीनीकरण हुआ तो उसी समय नई औद्योगिक संस्कृति का सृजन भी हुआ। इससे ही सामाजिक जीवन में अलगाव, विचलन व तरह-तरह के विसंगति भरे व्यवहार की अभिव्यक्ति हुई। इस औद्योगिक जगत ने रिश्तों की बदलती हुई नई परिभाषाएं गढ़ीं और उत्पादन व उपभोग के भी नए-नए तौर-तरीके विकसित कर दिए। कार्य की परिभाषा बदली तो तब लंबी थकान उतारने का साधन बन गया। शायद ही ऐसा कोई काल खंड रहा हो जब किसी समाज ने मूल्यहीनता और दिशाहीनता की बात न की हो। **प्राचीन ग्रीक साहित्य में अरिस्टाफनीज भी अपने समय के नेतृत्व और सामाजिक संरचना की कड़ी आलोचना करते हैं।** यहाँ पतंजलि ने भी आज से दो हज़ार साल पहले लिखा था कि अब कलि काल आ गया है और लोगों की आयु और बुद्धि क्षीण हो चले हैं। इस प्रकार के विचार प्रत्येक काल में उठते रहे, मगर देशज संस्कृति ने इस प्रकार के विचारों को सदैव आत्मसात कर लिया। **भारतीय संस्कृति सनातन है।** यह इतनी कमज़ोर तत्त्व नहीं कि जो छोटी-मोटी पब संस्कृति की आंधी से ढह जाए। मारल पुलिसिंग से संस्कृति का हमेशा नुकसान हुआ है। वह चाहे मेरठ की घटना हो या भुवनेश्वर की, मुंबई डांस बार बंद करने से जुड़ा मुद्दा हो या एमएनएस के कार्यकर्ताओं का उत्पात, ऐसे मुद्दे हमेशा समाज को झकझोर कर आत्म मूल्यांकन को मजबूर करते रहे हैं। इसलिए **हमें समय रहते पब में जाने वाले लड़के-लड़कियों से परहेज न करते हुए उस विचारधारा पर चोट करनी चाहिए जो इस पब संस्कृति के फैलने में मदद कर रही है।**

(लेखक समाजशास्त्र के प्राध्यापक हैं)

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 7.2.2009 से साभार

परिवारों को जोड़ने की पहल (मेरी बात)

किरन बेदी आपकी कचहरी के माध्यम से ऐसे मामलों का समाधान निकाल रही हैं जो घरों में आम होते हैं। छोटे–छोटे घरेलू मामलों के कारण एक भरापूरा परिवार बिखर जाता है। यह शो ऐसे ही बहुत से बिखरे परिवारों को जोड़ने की एक पहल है। स्टार प्लस, किरन बेदी और सिद्धार्थ बसु की यह पहल समाज में बढ़ते पारिवारिक विवादों के मामलों को कम करने का एक माध्यम भी बन सकता है। प्रस्तुत है आपकी कचहरी के संदर्भ में देश की पहली महिला आई.पी.एस. किरन बेदी के विचार

आपकी कचहरी का उद्देश्य आपके नज़रिए से क्या है ?

लोगों के बीच उनके अधिकारों को लेकर जागरूकता का प्रसार करना और ऐसे मामलों को दिशा देना है जिनके कारण परिवार में कटुता एवं अलगाव की भावना आ जाती है। यह कार्यक्रम समाज में शांति लाने और शिक्षा देने का माध्यम है। इसे हम फैमिली काउंसिलिंग कह सकते हैं। जो केस इस शो के लिए चुने जाते हैं उन्हें मैं नहीं चुनती। यह काम एनजीओ और चैनल के सहयोग से हो रहा है। पहले तो किसी भी पारिवारिक मामले की सच्चाई के बारे में गहराई से जाना जाता है और जिन मामलों को चुना जाता है उनकी सच्चाई को रिकॉर्ड किया जाता है, ताकि बाद में कोई मुकर न सके। फिर मेरे सामने केस आते हैं उन्हें समझने के बाद मैं कानूनी तौर पर मामले का समाधान निकालती हूँ जिस पर दोनों पक्षों की सहमति ज़रूरी है।

आपकी कचहरी में एनजीओ की क्या भूमिका है ?

देश में चलने वाली अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं विभिन्न समस्याओं के समाधान और ज़रूरतमंदों की मदद करने का काम करती हैं। बहुत से एनजीओ हैं जो सरकार द्वारा भी चलाए जा रहे हैं। ऐसे ही कुछ एनजीओ हैं जो घरेलू झगड़ों को इस मंच तक लाते हैं और आर्थिक मदद भी देते हैं।

हर मामला आपकी कचहरी तक नहीं पहुँच सकता है। ऐसे में स्थानीय स्तर पर क्या ऐसे मंच बनाए जा सकते हैं, किन लोगों को इनमें जोड़ा जा सकता है ?

समाज में **आपकी कचहरी** जैसे और भी मंच बनाए जा सकते हैं और उसी मंच से ऐसे बहुत से मामले निपटाए जा सकते हैं जो किसी कारण से मुझ तक नहीं पहुँच सकते। फैमिली काउंसलिंग सेंटर, सोशल वेलफेयर बोर्ड जैसी अनेक समाज सेवी और स्वयं सेवी संस्थाएं हैं जो पारिवारिक झगड़ों को निपटाने में मददगार साबित हो सकती हैं। ऐसे मंचों के लिए मूवमेंट चलाया जाना चाहिए। समाज में जो रिटायर्ड लोग हैं, पढ़े लिखे युवा हैं उन्हें शामिल किया जा सकता है। रेज़िडेंट वेलफेयर ऐसासिएशन बनाकर भी समझौते कराए जा सकते हैं। ऐसे मामलों के लिए लीगल मीडिएशन सेंटर बनाए जा सकते हैं जो कानून के साथ सहयोग कर बीच का रास्ता निकाल सकें। बहुत सारे लोग हैं जिन पर समाज विश्वास करता है। ऐसे लोग अपना समय समाज को दें। यह भी दूसरों की मदद करने का एक तरीका है।

आमतौर पर लोगों को कानून की सही जानकारी नहीं होती है, फिर ऐसे मंच कैसे सफल होंगे ?

हमारे देश में कई विश्वविद्यालय हैं जहाँ घरेलू झगड़े जैसे मेजर इश्यू पर शॉर्ट टर्म ट्रेनिंग मिल सकती है। समाज में यदि लोग नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक हों तो पारिवारिक विवाद के मामलों में बहुत कमी आ सकती है। हाँ, यह ज़रूर होना चाहिए कि ऐसे मंचों पर लोग एक या दो साल के लिए ही आएं और इसे नौकरी न बनाएं। देश के नौजवान इस कार्य में एक पैनल बनाकर जुट सकते हैं जिन्हें घरेलू हिंसा जैसे मामलों के बारे में ट्रेंड किया जा सकता है। ऐसी ट्रेनिंग के लिए लॉ स्कूल ऑफर कर कोर्स करा सकते हैं। ऐसा हो जाने से परिवारों में झगड़े कम होंगे और न्यायालय का बोझ भी कम हो सकेगा।

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 8.2.2009 से साभार

दहेज प्रताड़ना कानून महिलाओं के लिए अभिशाप !

(राष्ट्रीय बालिका दिवस)

महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाए गए दहेज प्रताड़ना कानून से आज महिलाएं ही सर्वाधिक प्रभावित हो रही हैं। अधिकांश मामलों में जहाँ यह कानून घर की एक महिला को अधिकार दे रहा है वहीं अन्य के लिए अभिशाप बनता जा रहा है। **वर्ष 2004-07 के बीच के आंकड़ों पर नज़र डालें तो इस अवधि के दौरान एक लाख 23 हज़ार महिलाओं (हर 21 मिनट में एक महिला की गिरफ्तारी) को इस कानून के तहत गिरफ्तार किया गया।** जबकि नेशनल क्राइम रिकॉर्डर्स ब्यूरो द्वारा 2007 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार दहेज प्रताड़ना के मामलों में आरोपी **94 प्रतिशत महिलाएं बाद में बेकसूर पाई जाती हैं।**

हैरानी की बात तो यह है कि यह कानून मासूम बच्चियों के लिए भी अभिशाप साबित हो रहा है। जिन मामलों में उनका कोई अपराध नहीं होता, उनमें उन्हें फंसा दिया जाता है। सिर्फ यू.पी. के खीरी जिले में दहेज प्रताड़ना के मामलों में 2000-2007 के बीच ऐसी 955 लड़कियां गिरफ्तार की गईं जिनकी उम्र 18 साल से कम थी। **राष्ट्रीय बालिका दिवस पर सेव फेमिली फाउंडेशन ने प्रेस वार्ता कर कहा कि सरकार ने दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) में संशोधन कर ऐसे मामलों में आरोपी को गिरफ्तार करने से पहले पुलिस को कारण बताने का जो नियम बनाया है, वह उचित है।**

फाउंडेशन ने कहा कि संशोधन समाज विरोधी नहीं है। वकीलों का एक वर्ग इस संशोधन का विरोध समाज के फायदे के लिए नहीं बल्कि अपने फायदे के लिए कर रहा है। नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट का हवाला देते हुए फाउंडेशन ने कहा कि **वर्ष 2007 में भारतीय दंड संहिता व अन्य कानूनों के तहत देश में लगभग 68 लाख लोग गिरफ्तार किए गए। जबकि पुलिस कमीशन की रिपोर्ट खुद यह मान रही है कि इनमें लगभग 60 प्रतिशत गिरफ्तारियां गलत थीं,** जिस कारण बाकी 40 प्रतिशत आरोपियों के साथ इन लोगों को भी जेल में रहना पड़ा। वर्ष 2004-2007 के बीच एक लाख 23 हज़ार महिलाओं को सिर्फ बहू की एक शिकायत के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया। जिनमें महिला के पति की मां, बहन, बुआ, चाची व अन्य रिश्ते की महिलाएं शामिल थीं। नए संशोधन के अनुसार पुलिस को इन्हें गिरफ्तार करने से पहले कारण बताना होगा।

मदर एंड सिस्टर इनिसिएटिव (मासी) की संस्थापक सदस्य सरोज अरोड़ा ने बताया कि उनकी बहू की एक झूठी शिकायत के कारण उनके पति को दिल का दौरा पड़ गया और वे चल बसे। इतना ही नहीं उनका बेटा मर्चेंट नेवी में नौकरी करता था, उसे भी पांच साल तक घर बैठना पड़ा। उन्होंने कहा कि उन मासूम बच्चियों का क्या कसूर है जिनके खिलाफ प्रतिशोध वश उनकी भाभियां दहेज प्रताड़ना में मामला दर्ज करा देती हैं। उनसे कौन शादी करेगा ?

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 25.01.2009 से साभार

अतीत से अलग अनुभव

-कैमिला हयात

पाकिस्तान - अफगानिस्तान के लिए अमेरिका के विशेष दूत रिचर्ड होलब्रूक का लाहौर का हालिया दौरा खूब मजेदार रहा। यहाँ शानदार बादशाही मस्जिद और लाहौर किला के समीप एक पुरानी 'हवेली' की छत पर एक कैफे में उन्होंने कबाब के साथ 'दाल' की फरमाइश की। रिचर्ड होलब्रूक का लाहौर के दिल में बसे रेस्त्रां में लजीज व्यंजन की दावत उड़ाना या फिर आतंक प्रभावित कबीलाई इलाके में कुछ देर के लिए उतरना अतीत से कुछ अलग कहानी बयान करता है। बहुत से पूर्व अमेरिकी यात्री भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच इस्लामाबाद में विहार करके लौट जाते थे। पाकिस्तान की सड़कों, बाज़ारों और अपेक्षाकृत समृद्ध इलाकों के घरों तक में अमेरिकियों के प्रति घृणा दिखाई देती है। दोटूक बात करने वाले होलब्रूक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह परिवर्तन लाना चाहते हैं। जब तक पाकिस्तान की समस्याओं को सही तरह से समझ न लें तब तक अपने विचारों को जाहिर करने से उन्होंने परहेज किया। जिनसे भी मुलाकात की उनकी बातों को गंभीरता से सुना।

होलब्रूक ने बार-बार दोहराया कि नई राह निकलने वाली है। पाकिस्तान में सभी का ध्यान इस पर है कि वह इसे किस रूप में लेते हैं। पाक-अफगान क्षेत्र के लिए उनके चुनाव से ही अमेरिकी सोच का पता चल जाता है। विशेष दूत कोई 40 साल पहले वियतनाम के मेकोंग डेल्टा में हुए भयावह अत्याचार करने वालों में शामिल रहे हैं। कुछ साल पहले उन्होंने दक्षिण कोरियाई सैनिकों को लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शनकारियों का खात्मा करने के लिए उकसाया था। अमेरिकी

सरकार कहती है कि उसने बाल्कन में एक निर्लज्ज युद्ध को समाप्त कराने में सहायता की, जबकि वहां होलब्रूक **के कारनामे विवादों को जन्म देने वाले रहे हैं। होलब्रूक और उनकी टीम पर आरोप है कि उन्होंने बोस्निया-हर्जेगोविना में मुस्लिम आबादी के नरसंहार के बाद सर्बों द्वारा हड़पे गए मुसलमानों के भूभाग में से अधिकांश पर सर्बों का हक मान लिया। इसके अलावा यह भी आरोप है कि उन्होंने युगोस्लाविया का विखंडन करने में भूमिका निभाई। इन क्षेत्रों में अभी तक अस्थिरता और बिखराव की प्रक्रिया जारी है।**

अब तक पाकिस्तान ने रिचर्ड होलब्रूक का स्नेही रूप ही देखा है। उन्होंने पहले ही आगाह कर दिया है कि उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता। इस्लामाबाद के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि होलब्रूक द्वारा बड़ी नरमी से बांह मरोड़ने और फिर बराक ओबामा की तरफ से आए एक फोन ने उस प्रेस कांफ्रेस में अहम भूमिका निभाई जिसमें आंतरिक सुरक्षा सलाहकार रहमान मलिक ने माना कि 26 नवम्बर को मुंबई हमले की योजना आंशिक रूप से पाकिस्तान में तैयार की गई थी। देश में एक बड़े तबके ने इस मुद्दे पर साफगोई की तारीफ भी की है। यह साफ है कि ओबामा प्रशासन पाक-अफगान क्षेत्र को अपनी विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु मानता है। ***XXXXX (आगे का भाग छोड़ दिया गया है)***

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 23.2.2009 से साभार

वैचारिक विद्वेष का नया रूप

-तरुण विजय

अल जजीरा समाचार चैनल ओसामा बिन लादेन और अल जवाहरी जैसों के बयान दुनिया भर में सबसे पहले प्रसारित करने के कारण चर्चित हुआ, लेकिन पिछले सप्ताह उसकी दिलचस्पी भारतीय संस्कृति में पैदा हुई और मंगलूर की घटना के संदर्भ में श्रीराम सेना से जुड़े अपने कार्यक्रम के लिए उसके संवाददाता ने मुझसे आधे घंटे का साक्षात्कार किया। उसने कहा कि वह भारतीयता को सही दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना चाहता है, लेकिन जब मैंने कार्यक्रम देखा तो पूरी तरह भारतीय मूल्यों के पक्षधरों को राक्षस के रूप में दिखाने वाला था, जो असभ्य तथा हिंसक है। मीडिया और राजनीति में जो स्वयं को सेकुलर तथा प्रगतिशील कहते हैं वे समाज के आग्रही हिन्दू और सभ्यतामूलक भारतीयता के पक्षधर वर्ग पर उस विषैले तेजाबीपन से प्रहार कर रहे हैं जो कभी गजनी और गौरी के सैन्य हमलों में दिखा करता था। उनके लिए रामायण पाठ पिछड़ापन तथा रुढ़िवादी और पब भरो की उच्छृंखलता नवीन आधुनिक चैतन्य का नाद है। राम जन्मभूमि पर मंदिर नहीं, टायलेट बनवाने की मांग सेकुलर है। कांची में शंकराचार्य की दीवाली पूजन करते हुए गिरफ्तारी, स्वामी लक्ष्मणानंद की कृष्ण जन्माष्टमी पर हत्या और गोधरा में रेल के डिब्बे में बंदकर 58 स्त्री, पुरुष, बच्चों को जलाकर मारने की घटनाएं क्षुद्र एवं विस्मरण योग्य हैं, लेकिन मंगलूर पब पटना तथा वैंलेटाइन डे पर किसी सिरफिरे द्वारा कार्ड जलाना संपूर्ण हिन्दू समाज को असभ्य सिद्ध करने का बड़ा हथियार बना दिया जाता है। कुछ दिनों से इन हिन्दू विद्वेषी 'एजेंडा पत्रकारों' ने गुजरात दंगों का पुन: स्मरण करते हुए नफरत भरा अभियान छेड़ा है, जिसमें एक केसरिया पट्टी बांधे और हाथों में तलवार लिए हिन्दू को गुजरात की वस्तुपरक रिपोर्टिंग का प्रतीक चिह्न बना दिया है। उद्देश्य है कि चुनाव से पहले हिन्दू-मुस्लिम ध्रुवीकरण गहरा करना ताकि भाजपा विरोधी दलों को चुनावी लाभ मिले। गोधरा पूरी तरह गायब है। मानो गुजरात में गोधरा है ही नहीं।

गुजरात दंगों में संसदीय पटल पर रखे गए गृह मंत्रालय के दस्तावेज के अनुसार जो 254 हिन्दू (और 790 मुसलमान) मारे गए थे, वे कौन थे? दु:ख इस बात का है कि गोधरा में मारे गए हिन्दुओं के बारे में वे नेता भी चुप रहे जो स्वयं को राजनीति में हिन्दू वेदना का प्रतिनिधि मानते हैं। हर दिन सिर्फ हिन्दू चेहरे बर्बर दरिंदों के रूप में गुजरात से मंगलूर तक दिखाए जाते हैं। कोई भी इस सवाल का जवाब नहीं मांगता कि गोधरा क्यों हुआ था? क्या कुछ भारतीय नागरिकों का अयोध्या जाना ऐसा गुनाह था कि उन्हें नन्हें बच्चों के साथ लोहे के डिब्बों में जिंदा जला दिया जाए ? जो सकुलर इसे बाबरी का प्रतिशोध कह कर न्यायोचित सिद्ध करते हैं वे उन हिन्दुओं को कायर कहेंगे क्या जिनके पास **कश्मीर में मुस्लिम जिहादियों द्वारा तोड़े व अपवित्र किए गए 172 से ज्यादा मंदिरों की सूची है?**

XXXXX (छोड़ दिया गया भाग)

कोलकाता में एक अंग्रज़ी दैनिक के संपादक व प्रकाशक की मुस्लिम मतांध भीड़ के दबाव में गिरफ्तारी तथा फिरकापरस्तों द्वारा हिंसक तोड़फोड़ पर सेकुलर चैनलों की खामोशी भारतीय मीडिया के एक वर्ग के स्वातीकरण का ताजा प्रमाण है। वह अखबार किसी भी कोण से हिन्दुत्व समर्थक नहीं, बल्कि उसका मूल स्वर हिन्दुत्व विरोधी ही है। उसने एक विदेशी पत्रिका में जिहादी विचारधारा पर छपा लेख पुनर्प्रकाशित किया। जहाँ वह लेख मूल रूप में छपा वहाँ कुछ नहीं हुआ, कोलकाता में मतांधों की भीड़ ने उस अखबार के कार्यालय पर हमला किया। सेकुलरिज़्म की शान कही जाने वाली बंगाल की वाम सरकार ने संपादक की गिरफ्तारी के आदेश दे दिए। सोचिए अगर हमलावर केसरिया रंग के होते तो अल जजीरा से लेकर भारतीय चैनल तक कितना शोर मचाते ?

भारत में हिन्दू समाज की मुख्यधारा सर्वपंथ समभाव में विश्वास करती है। वह स्त्रियों के संदर्भ में समानता का बोध मान्य व क्रियान्वित करती है। सैंकड़ों सालों से विदेशी विधर्मी बर्बरों के आघात झेलते रहने के बावजूद नफरत भरी हिंसा का समर्थक नहीं बनीं। फिर भी उसे अपने ही घर में बहिष्कृत अपमानित एवं लज्जित करने वाले ये सेकुलर उसे बार-बार गोधरा अग्निकुंड में क्यों गुजारते हैं? क्या इन्हें एजेंडा पत्रकार नहीं कहा जाना चाहिए। **जैसे राष्ट्रीय ध्वज पर अशोक चक्र और हिन्दू धार्मिक ध्वज पर ओम का प्रतीक होता है वैसे ही सेकुलरवादी झंडे का प्रतीक गुलाबी चड्ढी और बियर बोतल बन गई है। पब भरो का नारा वस्तुतः स्त्री के उपभोग को प्रोत्साहित करने वाला आचरण है।** क्या आश्चर्य की बात समझी जाए कि गोधरा भुलाने वाले, अयोध्या विरोधी, कश्मीरी हिन्दुओं के नरसंहार पर खामोश रहने वाले ही सेकुलर गुलाबी चड्ढी वाले बियरप्रेमी वर्ग के अग्रगामी हैं?

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 23.2.2009 से साभार

मकसद वाली दोस्ती

-नफीस अहमद

मुलायम सिंह यादव भारतीय सेकुलरिज़्म का एक प्रमुख चेहरा रहे हैं। मुसलमानों से उनका एक खास संबंध रहा है। अपने लंबे सियासी कैरियर में उन्होंने चाहे कितने पैंतरे बदले हों, अल्पसंख्यकों से उनका लगाव हमेशा अपनी जगह कायम रहा। अयोध्या में विवादित ढाँचा बचाने के लिए उन्होंने जो सख्ती की थी उसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। वह अकेले ऐसे लीडर हैं जिन्होंने मुसलमानों को कम से कम बेइज्जत नहीं होने दिया। किसी हद तक यही बात लालू प्रसाद यादव और कम्युनिस्टों के बारे में कही जा सकती है। जब मुलायम सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे तो इस प्रदेश में हर जगह मुसलमन सीना तान कर चलते थे। आतंकवाद के नाम पर उन्हें बिना किसी कारण गिरफ्तार नहीं किया गया। उनके शासन में एक कांस्टेबल और थानेदार से लेकर एसपी और डीएम तक को यह मालूम था कि मुसलमानों के साथ ज्यादती बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अभी हाल में जब नई दिल्ली में बम धमाकों के सिलसिले में आजमगढ़ को आतंकगढ़ का नाम दिया गया और मुस्लिम नौजवानों की पकड़-धकड़ शुरू हुई तो मुलायम सिंह आजमगढ़ और वहाँ के मुसलमानों के हक में सामने आए। उन्हें इस बात का दर्द जरूर होगा कि इसी आजमगढ़ ने समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार को हराकर बीएसपी के उम्मीदवार अकबर अहमद डंपी को लोकसभा भेजा। बटला हाउस मुठभेड़ के सिलसिले में मुलायम सिंह और उनकी पार्टी ने ओखला के लोगों का साथ दिया।

पिछले कुछ दिनों से मुलायम सिंह भाजपा के पूर्व वरिष्ठ नेता कल्याण सिंह का साथ लेने के कारण राजनीतिक चर्चा के केन्द्र में है। वह यह स्पष्ट कर चुके हैं कि **कल्याण सिंह का साथ भाजपा को सत्ता में आने और आडवाणी को**

प्रधानमंत्री बनने से रोकने के लिए लिया गया है। जो लोग इस वक्त इन दोनों नेताओं की निकटता की मुखालफत कर रहे हैं वे उस समय कहाँ थे जब कल्याण सिंह ने उत्तर प्रदेश में भाजपा की कब्र खोदने के लिए सपा का साथ दिया था और **जब मुलायम सिंह की सरकार में कल्याण सिंह के बेटे राजबीर सिंह मंत्री बने थे? उस सरकार में आजम खां भी मंत्री थे।** उस समय भी राजबीर सिंह और कल्याण सिंह वही थे जो आज हैं। कल्याण सिंह अपने आप में कुछ नहीं हैं। वह अभी तक जो कुछ कह रहे थे और उन्होंने अभी तक जो कुछ किया वह संघ परिवार और भाजपा के हुक्म पर किया। सब जानते हैं कि संघ में व्यक्ति की कोई हैसियत नहीं है। अहमियत होती है संघ की विचारधारा की। मौजूदा केन्द्रीय मंत्री शंकर सिंह वाघेला भी किसी जमाने में संघ के चहेते थे, लेकिन जब उन्होंने भाजपा का साथ छोड़कर कांग्रेस का हाथ थाम लिया तो वाघेला एक बिल्कुल नए रूप में सामने आए। **हमें कल्याण सिंह से भी यही उम्मीद करनी चाहिए और उन्हें संघ के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहिए।** कल्याण सिंह कल तक खुद को राम मंदिर का भक्त बताते थे, आज वही उत्तर प्रदेश में मुस्लिम वोट बैंक की अहमियत को समझकर यह कहते फिर रहे हैं कि अयोध्या में राम मंदिर जोर-जबरदस्ती से नहीं, बल्कि बातचीत के जरिए बनाना चाहिए। यह मुसलमानों की जीत नहीं तो और क्या है। कल्याण सिंह से मुलायम सिंह की दोस्ती को इसी रोशनी में देखना चाहिए। **आडवाणी के सपने को चकनाचूर करने में अगर कल्याण सिंह से सहायता मिलती है तो उनका साथ लेना बेहतर ही होगा।** मुसलमानों और कांग्रेस को यह भी याद रखना चाहिए कि 2004 के आम चुनाव में सपा ने ही उत्तर प्रदेश में भाजपा को धूल चटाई थी। बड़ी सच्चाई यह है कि अगर उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह की पार्टी को लोकसभा की 40 सीटें न मिली होतीं और भाजपा के महारथी सफल हो जाते तो केन्द्र में कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार भी नहीं बनती। इस बार भी मुलायम सिंह और उनके सहयोगी उत्तर प्रदेश में यही करने जा रहे हैं।

वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता और सियासत के चाणक्य कहे जाने वाले हरकिशन सिंह सुरजीत ने मुलायम सिंह के बारे में कहा था कि वह फिकरापरस्ती के खिलाफ हमारी लड़ाई के जनरल हैं। स्वयं राजीव गांधी फिकरापरस्तों से लोहा लेने की मुलायम सिंह की हिम्मत के कायल थे। सब जानते हैं कि उत्तर प्रदेश की सियासत की बिसात पर तीन खिलाड़ी हैं - सपा, बसपा और भाजपा। **बसपा से मुसलमानों की केमेस्ट्री मिलती नहीं है,** जबकि भाजपा की सच्चाई से सब वाकिफ हैं। फिर तो सपा ही बचती है। अगर हम इससे भी नाराज़ हो जाते हैं तो उत्तर प्रदेश का क्या सियासी नक्शा बनेगा ? **उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव और मुसलमान एक-दूसरे के लिए ही बने हैं।** मुसलमान एक ऐसे नेता से अलग होने का खतरा नहीं उठा सकते जिसने संकट की हर घड़ी में उनका साथ दिया है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

'दैनिक जागरण' दिल्ली , 17.2.2009 से साभार

उपराष्ट्रपति को बस मुस्लिमों की चिंता - सेकुलर सरपरस्ती की हद

आपको याद कराते चलें कि संविधान सभा में 26 मई 1949 को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि 'चाहे अल्पसंख्यकों के लिए जगह के आरक्षण का सवाल हो या किसी अन्य प्रकार के संरक्षण का प्रश्न हो, इसे वहीं पर माना जाना चाहिए जहाँ पर कोई निरंकुश या विदेशी शासन हो, किन्तु यहाँ तो लोकतंत्र है, ऐसी स्थिति में अल्पसंख्यक वर्ग को यदि कोई संरक्षण दिया जाता है तो वह हमेशा के लिए आपसे कट जाएगा और बहुसंख्यकों के साथ न चलकर एक अलग ही दिशा में चलेगा।' उसी दिन संविधान सभा में बिहार के प्रतिनिधि तजम्मुल हुसैन ने कहा था कि हम यहाँ अल्पसंख्यक नहीं हैं। अल्पसंख्यक शब्द तो अंग्रेज़ों का चलाया हुआ है। अंग्रेज़ चले गए, अब आप इस शब्द को भी शब्दकोष से निकाल दीजिए।

भारत की संविधान सभा ने अल्पसंख्यकों को विशेष सुविधा देने के विषय पर तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल की अध्यक्षता में अल्पसंख्यक परामर्शदातृ समिति बनाई थी, जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद, मौलाना हफीजुर्रहमान, बेगम

एजाज रसूल, सैयद मोहम्मद सादुल्ला जैसे मुस्लिमों सहित चालीस सदस्य थे। इस समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए 25 व 26 मई 1949 को संविधान सभा में सरदार पटेल ने कहा था कि जो अल्पमत जबरदस्ती देश का विभाजन करा सकता है, उसे आप अल्पसंख्यक क्यों समझते हैं। वह एक मजबूत सुसंगठित और सुसंबद्ध अल्पमत है, फिर उसे संरक्षण और विशेष सुविधाएं क्यों?

इसके बावजूद देश में सच्चर कमेटी बनी, उसने मुस्लिमों के पिछड़ेपन को दूर करने` लिए 5,460 करोड़ रुपये का प्रावधान भी किया। सरकारी पदों, यहाँ तक कि सेना में भी मुस्लिमों की गिनती करवाने की योजना प्रस्तुत की। अच्छा हुआ कि जेल बंदियों की गिनती नहीं करवाई गई अन्यथा 30 प्रतिशत अपराधी अल्पसंख्यक मिलते और 99 प्रतिशत से अधिक आतंकवादी भी खास किस्म के अल्पसंख्यक ही दिखाई पड़ते।

देश का दुर्भाग्य है कि यहाँ जम्मू-कश्मीर में घाटी के अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय को निकाल दिया गया जो अपने ही देश में शरणार्थी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। लेकिन महामहिम एक शब्द भी नहीं बोल सके। नेपाल से माओवादी सरकार ने पशुपतिनाथ मंदिर के भारतीय पुजारियों को निष्कासित कर दिया, अफगानिस्तान में मंदिरों पर कब्जा कर लिया गया, पाकिस्तान, बंगलादेश में वहाँ के अल्पसंख्यकों का भयानक उत्पीड़न आज भी जारी है। **भूटान में 90 के दशक में वहां के एक लाख हिन्दू अल्पसंख्यकों को देश से निकाल दिया गया जो यूनाइटेड नेशंस हाई कमीशन फार रिफ्यूजी द्वारा लगाए गए राहत शिविरों में हैं। फिजी में 34 प्रतिशत हिन्दू ईसाई चरमपंथियों की दुर्भावना के शिकार हैं।** सऊदी अरब में हिन्दू समुदाय को अपने धार्मिक प्रतीकों पर आस्था न रखने का हुक्म है। कजाकिस्तान, मलयेशिया, त्रिनिदाद, श्रीलंका आदि में वहाँ के अल्पसंख्यकों की दशा भी अत्यंत भयानक है। **बंगलादेशी हिन्दु शत्रु संपत्ति अधिनियम 1965 का दंश झेल रहे हैं। भारत में तो अल्पसंख्यकों के लिए हमारी सरकारें और नेता सब कुछ करने को तैयार हैं और हिन्दुओं का दमन करने को तत्पर हैं।** शुक्रवार को स्कूल से लेकर कचहरी तक नमाज की छूट दे दी जाएगी। **हिन्दू मंदिरों पर रिसीवर बैठाकर वसूल की गई धनराशि भी हज की सब्सिडी के रूप में दी जाती है।** अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं को विशेषाधिकार, मनमाना पाठ्यक्रम, मनचाहे शिक्षकों की नियुक्ति, **अलग अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय, अलग आर्थिक कारपोरेशन, सरकारी खर्चे पर देश विभाजन के लिए जिम्मेदार अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को उच्च न्यायालय की आपत्ति के बाद भी अल्पसंख्यक शिक्षण संस्था का दर्जा, अल्पसंख्यक संस्थानों को पिछड़े वर्ग की आरक्षण व्यवस्था के अनुसार उच्च शिक्षा में प्रवेश न देने की छूट आदि सुविधाएं देकर अल्पसंख्यकों के लिए या उनका विकास करने के लिए क्या नहीं किया, फिर भी अतिरिक्त संरक्षण, क्यों?**

***XXXXX** (छोड़ दिया गया भाग)*

पांचजन्य, दिल्ली, 1 मार्च 2009 से साभार

हिन्दू राष्ट्रवादी हो सकता है, उग्रवादी नहीं

-योगी आदित्यनाथ

हिन्दू युवा वाहिनी के संयोजक व भाजपा सांसद् योगी आदित्यनाथ से संजय सिंह की बातचीत

मालेगांव विस्फोट में जिस तरह युवा साधु-संन्यासियों की भूमिका सामने आ रही है, क्या इसे हिन्दू उग्रवाद का उभार माना जाए?

हमें पहले उग्रवाद, आतंकवाद और अलगाववाद को समझना पड़ेगा। अगर इसको हम समझ लें तो स्पष्ट हो जाएगा कि हिन्दू उग्रवादी हो ही नहीं सकता। उग्रवादी या आतंकवादी वही हो सकता है जो राष्ट्र की परंपरा,देश के संविधान और

कानून को नहीं मानता। मालेगांव की घटना में कुछ हिन्दुओं के नाम आए, पर किसी के खिलाफ कोई प्रमाण नहीं मिला। साध्वी और सेना के अफसर को शक के आधार पर राजनीति से प्रेरित होकर गिरफ्तार किया गया है। कांग्रेस सरकार की मंशा इसी से स्पष्ट हो जाती है कि साध्वी प्रज्ञा का चार बार नार्को टेस्ट कराया गया। मालेगांव मामले में ही इसके पहले मुस्लिम आतंकवादी पकड़े गए थे, लेकिन सरकार ने उनका चार बार नार्को टेस्ट नहीं कराया। दरअसल कांग्रेस मुस्लिम आतंकवाद से जनता का ध्यान हटाने के लिए हिन्दुओं को फँसाने का कार्य कर रही है।

हिन्दू धर्म का सार ही है सहिष्णुता और अहिंसा। अगर यह साबित हो जाता है कि मालेगांव घटना में हिन्दुओं का हाथ है तो क्या यह इस धर्म की आत्मा पर चोट नहीं होगी?

मेरा मानना है कि मालेगांव की घटना में किसी हिन्दूवादी संगठन या हिन्दू का हाथ नहीं होगा। लेकिन अगर ऐसा है भी तो यह हिन्दू आतंकवाद नहीं बल्कि सरकार को चेतावनी है कि वह तुष्टीकरण और वोट बैंक की राजनीति के चलते मुस्लिम आतंकवाद को हल्के में न ले, उसकी अनदेखी न करे।

हिंसा का जवाब हिंसा तो नहीं हो सकता। इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ हिन्दू उग्रवाद का उभार क्या देश की एकता-अखंडता के लिए घातक नहीं होगा?

हिंसा का जवाब अहिंसा नहीं हो सकता। राष्ट्र एक जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं है। राष्ट्र की संस्कृति नहीं रहेगी तो यह टुकड़ा भी नहीं बचेगा। 'शस्त्रेण रक्षते राष्ट्रते, राष्ट्र चिन्ता प्रवर्तते।' यानि कि शस्त्र से सुरक्षित राष्ट्र में ही राष्ट्र चिन्तन हो सकता है। बुद्धि और वैभव दोनों का विकास हो सकता है। अलगाववाद, आतंकवाद और उग्रवाद से पीड़ित राष्ट्र में नहीं।

देश में बढ़ते आतंकवाद की वजह आप किसे मानते हैं?

देश ही नहीं, पूरी दुनिया इस्लामिक आतंकवाद से त्रस्त है। जेहाद और जन्नत की परिकल्पना आतंकवाद का कारण है। इस्लामिक आतंकवाद की वजह से देश में एक करोड़ की संपत्ति का नुकसान हुआ है। 90 हज़ार से अधिक हिन्दू जनता मारी गई है। आठ हजार से अधिक सेना के जवान मारे गए हैं। इसके लिए जिम्मेदार संप्रग सरकार है। इसके बावजूद भारत की आंख नहीं खुल रही है। तो यह 'आ बैल मुझे मार' कहावत को चरितार्थ करने जैसा है। सरकार वोट बैंक के नजरिए से इसको नजरअंदाज करती आ रही है। देश के विभिन्न हिस्सों में जो विस्फोट की घटनाएं हुई हैं उसके पीछे कौन है सबको पता हैं पाकिस्तान और बांग्लोदश से उड़कर कोई आतंकवादी यहाँ नहीं आता। दरअसल यहाँ के कुछ लोगों का ही उन्हें समर्थन और सहयोग प्राप्त है।

भारत हिन्दू बहुल देश है। ऐसे में यहाँ अल्पसंख्यकों में असुरक्षा का बोध होना स्वाभाविक है ?

यह सरासर झूठ है। दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ अल्पसंख्यक अपनी मर्जी से जीता है। उसके लिए बराबर कानून है। यहाँ अल्पसंख्यकों की इच्छा के अनुसार व्यवस्था चलती है। यह तो अक्षम राजनीतिक नेतृत्व और कथित धर्मनिरपेक्ष दलों की करतूत है जो उन्हें असुरक्षा का बोध कराकर अपना वोट बैंक सुनिश्चित रखना चाहता है। इन दलों ने हिन्दू समाज को भी भाषा-नीति के नाम पर बाँटकर छिन्न-भिन्न कर दिया है।

आप पर भी हिन्दू जनभावनाओं को भड़काने के आरोप लगते रहे हैं। मालेगांव मामले में पहले आपका नाम भी उछला था?

हम राष्ट्र की बात करते हैं, हिन्दू एकता की बात करते हैं। अस्पृश्यता और छुआछूत जैसी बुराइयों को दूर करने की बात करते हैं। वे नादान हैं जो मेरे इस भाव को समझने का प्रयास नहीं कर रहे। वे राष्ट्र विरोधी तत्वों के हाथों खिलौना बन गए हैं। मैं तो चैलेंज करता हूं कि मेरे खिलाफ कोई प्रमाण हो तो कार्रवाई करें। रही बात मालेगांव मामले में मेरा नाम उछालने की तो उत्तर प्रदेश सरकार के एडीजे ने भी अपनी सफाई में स्पष्ट कर दिया है। एटीएस ने भी इसका खंडन किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बजरंग दल जैसे हिन्दूवादी संगठनों पर भी सांप्रदायिक हिंसा भड़काने के पुख्ता आरोप हैं ?

इन संगठनों पर वही राजनीतिक दल बेसिर-पैर का आरोप लगाते रहते हैं जो अपना आधार बचाने के लिए बेचैन हैं। यह खिसियानी बिल्ली खंभा नोचने जैसा है।

आतंकवाद का इलाज क्या है?

इसके खिलाफ सख्त कदम उठाने की जरूरत है। भगवान् राम के समय में भी सबसे बड़ा आतंकवादी रावण था।

आतंकवाद से निपटने में भाजपा नीत राजग सरकार भी अक्षम रही थी ?

भारतीय जनता पार्टी ने अपने छह साल के कार्यकाल में आतंकवाद, नस्लवाद और अलगाववाद से निपटने के लिए अच्छा प्रयास किया। इसके लिए कड़ा कानून बनाया। पूर्वोत्तर भारत में एक उग्रवादी संगठन को तो पूरी तरह नेस्तनाबूद कर दिया गया था। राजग के शासनकाल (1998 से 2004) में नक्सलवाद जहाँ सिर्फ 56 जिलों में सीमित था, संप्रग सरकार के आते ही 215 जिलों में फैल गया। असम में हूजी से कौन समर्थन लेता है। चार करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठियों को असम में कौन पूज रहा है ? जम्मू-कश्मीर में पीडीपी से कौन लोग लाभ ले रहे हैं। यह सब कहने की जरूरत नहीं है।

'राष्ट्रीय सहारा' नई दिल्ली, 16 नवम्बर 2008 से साभार

गुम हो रहे लाल, खौफजदा एनसीआर

दिल्ली से छह बच्चे रोज़ होते हैं गायब

विगत जनवरी माह में सिर्फ दिल्ली से 196 बच्चे लापता हो गए। पुलिस के अनुसार, दिल्ली में रोजाना औसतन छह बच्चे गुम हो जाते हैं। **देश में हर साल औसतन 44 हजार बच्चे गुम होते हैं।** इन बच्चों में सर्वाधिक 6.7 फीसदी बच्चे दिल्ली के ही होते हैं। यदि पुलिस की 80 फीसदी बच्चे मिल जाने की बात मान भी ली जाए, तो भी करीब आठ हज़ार बच्चे हर साल हमेशा के लिए लापता होते हैं। निठारी कांड के बाद **राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य पीसी शर्मा की अध्यक्षता** में गठित कमेटी ने कहा था कि लापता होने वाले बच्चे या तो रंजिश की वजह से मार दिए जाते हैं या उनका उपयोग खतरनाक औद्योगिक इकाइयों तथा घरों में सस्ते बंधुआ श्रमिक, बाल वेश्यावृत्ति, चाइल्ड पोर्न, भीख मंगवाने, गोद लेने, जबरन शादी या मानव अंग तस्करी में किया जाता है।

बच्चे उठाने वाले कई गैंग सक्रिय : कालिया

चाइल्ड एंड वूमेन केयर सेंटर की अध्यक्ष सरिता कालिया बच्चों के लापता होने को संगठित अपराध के तौर पर देखती हैं। उनके अनुसार भीख मंगवाने तथा चोरी तथा झपटमारी के लिए बच्चों को उठाने वाले कई गैंग राजधानी में सक्रिय हैं।

चुराए जा रहे हैं बच्चे : डॉ. कैलाश सत्यार्थी

बचपन बचाओ आन्दोलन के कैलाश सत्यार्थी मानते हैं कि हर साल गायब होने वाले बच्चों की तादाद पुलिस आंकड़ों से कहीं अधिक है। पर पुलिस सच्चाई सामने नहीं लाती। उनके मुताबिक, जिन इलाकों में बच्चे निरंतर लापता हो रहे हैं, वहाँ बीट कांस्टेबल, एसएचओ व इलाके के एसीपी तथा डीसीपी की इस संबंध में जवाबदेही तय होनी चाहिए। बच्चों को चुराया जा रहा है। संगठित गिरोह इसके पीछे हैं। सत्यार्थी के अनुसार राजधानी में वर्ष 2008 में उनकी संस्था ने दो हजार बच्चे मुक्त कराए, जिन्हें बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल समेत देश के विभिन्न हिस्सों से लाया गया था।

पूर्वी दिल्ली से बच्चे गायब होना प्रेम प्रसंग का मामला : डडवाल

दिल्ली पुलिस के मुखिया वाईएस डडवाल कहते हैं कि अभी तक कोई ऐसा मामला सामने नहीं आया है, जिसमें संगठित तौर पर किसी गिरोह द्वारा बच्चा उठाने की बात पता चली हो। लापता बच्चों के मामलों को हम गंभीरता से ले रहे हैं। जिला व थाना स्तर पर सेल गठित किए गए हैं। पूर्वी दिल्ली से दो दिन पहले गायब हुए बच्चों के मामले को वह प्रेम प्रसंग का मामला बताते हैं।

गाजियाबाद से ढाई माह में 15 बच्चे लापता

दिसम्बर माह से लेकर अब तक यानि कुल ढाई माह के दौरान जिले से कुल 15 बच्चे लापता हुए हैं। इनमें से ज्यादातर छात्र हैं। खास बात यह भी है कि देहात क्षेत्र के मुकाबले लापता बच्चों की संख्या शहरी क्षेत्र में ज्यादा है। इनमें शहरी क्षेत्र से नौ व देहात क्षेत्र से छह बच्चे हैं। एसपी सिटी अनंत देव का कहना है कि लापता बच्चों के ज्यादातर स्कूली बच्चे रहे हैं। इनमें भी ज्यादातर बच्चे शिक्षक, परीक्षा या परिजनों की पिटाई के भय से ही लापता होते हैं।

निठारी कांड के बाद नोएडा से अब तक 17 बच्चे लापता

निठारी कंकाल कांड के बाद पुलिस गुम हुए बच्चों को लेकर सचेत होने का दावा तो करती है, लेकिन वास्तविक स्थिति इससे परे है। अब भी शहर से 17 बच्चे गायब हैं, जिन्हें ढूंढने की जिम्मेदारी लापता बच्चों को पता लगाने के लिए बनाए गए सेल के पास है। पर स्थानीय पुलिस से सहयोग न मिल पाने के कारण वह बच्चों को ढूंढने में नाकाम है। इन 17 बच्चों में ज्यादातर बच्चे सेक्टर-24 कोतवाली क्षेत्र के गिझौड़ गांव के हैं। गायब हुए बच्चों में से दो बच्चे निठारी के भी हैं। सेल के रिकॉर्ड के अनुसार जनवरी 2007 से अब तक शहर से कुल 29 बच्चे लापता हुए, जिसमें से 12 बच्चों को सेल ने ढूंढ निकाला।

गुड़गांव में डेढ़ माह में दस बच्चे लापता

साइबर सिटी में कुछ समय से नौनिहालों के गुम होने का ग्राफ काफी तेज़ी से बढ़ा है। स्कूली बच्चों के अचानक व रहस्यमय तरीके से लापता होने से शहरवासियों को अनजाना-सा भय सताने लगा है। जिन लोगों के भी बच्चे गुम हुए हैं, उनके दिमाग में निठारी कांड घूम रहा है। डेढ़ माह में गुड़गांव के विभिन्न थाना क्षेत्रों में दस बच्चों के लापता होने का मामले दर्ज हुए हैं। इनकी उम्र चार से दस वर्ष के बीच है। पुलिस आयुक्त मोहिंदर लाल का कहना है कि गुम बच्चों की तलाश के लिए किसी पुलिस अधिकारी को अलग से जिम्मेदारी सौंपने पर विचार किया जा सकता है।

फरीदाबाद से पिछले साल गायब हुए 70 बच्चे

जिले से हर साल दर्जनों बच्चे लापता हो जाते हैं, जिनका कुछ पता नहीं चल पाता। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक वर्ष 2008 में शहर से करीब 185 लोग लापता हुए। इनमें करीब 70 बच्चे थे। ये तो वे आँकड़े हैं, जो पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज हैं।

मानवाधिकार आयोग के सुझाव

* पुलिस लापता बच्चों की बरामदगी को प्राथमिकता माने। सभी राज्यों के पुलिस प्रमुख उचित कदम उठाएं।
* सभी थानों में लापता बच्चों की तलाश को विशेष स्क्वायड गठित हों। शिकायतें रजिस्टर्ड करने के लिए अधिकारी हो।
* जिला प्रशासन बाल श्रम कराने वाले प्रतिष्ठानों का लगातार निरीक्षण करे।
* सभी राज्यों को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे देशभर में लापता बच्चों के बारे में सूचनाएं प्राप्त हो सकें।

'जागरण सिटी', दिल्ली, दिनांक 19.2.2009 से साभार

भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन क्रांति की ज़रूरत : स्वामी रामदेव

नई दिल्ली, 'भ्रष्टाचार के राक्षस का वध करने का समय आ गया है। इसके लिए वैचारिक क्रांति लाने की ज़रूरत है। यदि 99 प्रतिशत लोग खड़े हो जाएं तो एक प्रतिशत से कम लोगों द्वारा फैलाया अनाचार टिक नहीं सकता।' योग गुरु स्वामी रामदेव ने ये शब्द देसराज चौधरी स्मृति व्याख्यान की 24वीं कड़ी में 'देशव्यापी भ्रष्टाचार और उसका समाधान' विषय पर भाषण करते हुए कहे। भ्रष्टाचार को देश की सब समस्याओं की जड़ बताते हुए उन्होंने देश प्रेम का वही जज़्बा फिर से पैदा करने की ज़रूरत बताई, जिससे प्रेरित होकर अगणित बलिदानियों ने मातृभूमि पर प्राण उत्सर्ग किए थे।

स्वामी जी ने कहा कि भ्रष्टाचार मिटने पर गरीबी, बेरोज़गारी रह नहीं सकती। पांच साल में आई विचारों की खोट दूर करने के लिए एक दिन उठना होगा। आने वाले चुनाव में सौ प्रतिशत मतदान की जरूरत बताते हुए उन्होंने देशवासियों से अपील की कि वे स्वच्छ छवि वाले ईमानदार उम्मीदवार को मत दें।

स्वामी रामदेव जी ने कहा कि अपराधीकरण भ्रष्टाचार की स्वाभाविक परिणति है। आतंकवाद सहित सभी समस्याएं भ्रष्टाचार से ताकत पा रही हैं। बड़ी तादात में विदेशी अवैध रूप से भारत में रह रहे हैं, जिनकी मौजूदगी कभी भी देश की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकती है। अब इन्हें नागरिकता देने की मांग उठने लगी है। वोट बैंक की राजनीति ने देश को गंभीर क्षति पहुँचाई है।

रामदेव जी ने कहा कि आज नागरिक चार तरह के टैक्स देने पर मजबूर है - आयकर, बिक्री कर, उत्पाद शुल्क और चौथा गुंडा टैक्स। राजनीतिक दलों और नेताओं को अलग से चन्दा देना पड़ता है। हम क्यों भ्रष्ट और बेईमानों को सहन करें हम जगेंगे तो क्यों नहीं अच्छा देश बनेगा।

उन्होंने कहा विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका पर लगे प्रश्न चिह्नों को मिटाने का वक्त आ गया है। 'यह आपके तप और पुरुषार्थ से होगा।'

स्वामी जी ने कहा कि विदेशी भाषा का राष्ट्र भाषा के रूप में प्रयोग शर्मनाक है। देश की भाषा में शिक्षा देने पर गरीब किसान का बेटा डॉक्टर, इंजीनियर और जज बनेगा।

'चित्र की नहीं, चरित्र की पूजा करो' ऋषि दयानन्द के इस संदेश का स्मरण दिलाते हुए रामदेव जी ने कहा कि जड़ पूजा करते-करते जड़त्व आ गया था। अब चैतन्य लाने की जरूरत है। उन्होंने भरोसा दिलाया, आप जगे हैं तो देश जगेगा।

'दिल दिया है, जां भी देंगे ऐ वतन तेरे लिए' यह गीत गुनगुनाते हुए स्वामी जी ने कहा कि मेरे लिए योग से पहले राष्ट्रधर्म है, क्योंकि वतन नहीं होता तो मैं योगी नहीं होता और योगी न होता तो संन्यासी नहीं बन सकता था। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में भारत की गरीब व भ्रष्ट देश की छवि बनाने में हमारी राजनीतिक व्यवस्था पूरी तरह जिम्मेदार है।

सभा की अध्यक्षता कर रहे शिक्षाविद् डॉ. रामप्रकाश ने कहा कि दुनिया में बुराई भले लोगों की अकर्मण्यता के कारण है। आज का व्यक्ति भ्रष्टाचार के साथ समझौता करता दिखाई देता है। स्थिति में बदलाव लाने के लिए सोच बदलनी होगी। यह समझना होगा कि जीवन में दिव्यता ऊँची है, सफलता उतनी ऊँची नहीं।

स्वामी रामदेव और डॉ. रामप्रकाश ने देसराज चौधरी द्वारा राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में की गई सेवाओं की याद दिलाई।

चन्द्र आर्य विद्या मंदिर की छात्राओं के समूहगान का नज़ारा अद्भुत था, जिसमें सभी उपस्थित जनों ने शिरकत की।

सभा का संचालन कर रहे पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी ने बताया कि देसराज चौधरी स्मृति व्याख्यानमाला में चार पूर्व प्रधानमंत्री, एक उपराष्ट्रपति, उप प्रधानमंत्री, कई केन्द्रीय मंत्री और तीन आर्य संन्यासी भाग ले चुके हैं। इसका शुभारंभ 24 साल पहले मोरारजी देसाई के संबोधन से हुआ था।

गरीबों की अनदेखी मूर्तियों व स्मारकों का बजट

उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री लाल जी वर्मा ने विगत 13 फरवरी को विधानसभा में हालांकि घाटे का बजट रखा है, लेकिन मुख्यमंत्री मायावती की मंशा पर ध्यान दिया जाए तो आधारभूत ढाँचा खड़ा करने के बजाय राज्य सरकार ने आगामी लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए गैर विकास कार्यों पर ज्यादा ध्यान दिया, विशेष रूप से अल्पसंख्यकों यानि मुसलमानों को अपने पाले में खींचने की कोशिश की गई। आश्चर्यजनक तो यह है कि मायावती सरकार ने 7 अरब से ज्यादा रुपये 'दलित आन्दोलन' से जुड़ी मूर्तियों और पार्कों के निर्माण के लिए खर्च करने का लक्ष्य रखा है।

राज्य में पहले से ही गैर योजनागत खर्चे में भारी वृद्धि हो चुकी है। 2009-10 में कुल राजस्व प्राप्तियां 121502.96 करोड़ रुपये अनुमानित हैं जबकि खर्च 133596.98 करोड़ रुपये है। इस तरह अनुमानित घाटा 12094.02 करोड़ रुपये है। कहा जा सकता है कि राज्य का खर्च बेकाबू हो चुका है। इसके बाद भी मायावती ने गैर विकास कार्यों पर खर्च करने में कोई कोताही नहीं की। उन्होंने विशेष रूप से बहुजन समाज के नायकों साहू जी महाराज, कांशीराम, डॉ. अम्बेडकर, ज्योतिबा फुले, रमाबाई आदि के नाम पर पार्कों, स्मारक-स्थलों, प्रेरणा स्थलों आदि के निर्माण पर अंधाधुंध पैसे को स्वीकृति दी है। इसके अलावा मुसलमानों के लिए भी उन्होंने बजट का मुंह खोल दिया है।

मायावती ने आम बजट में अल्पसंख्यक वोट बैंक को रिझाने के आलिया स्तर के 100 मदरसों को अनुदान सूची में रखा है। इसके अलावा लखनऊ में अरबी-फारसी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए भी धन की व्यवस्था की गई है। अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति के लिए 212 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। लखनऊ में हज हाउस के निर्माण के लिए करीब साढ़े चार करोड़ रुपये दिए गए हैं।

'पांचजन्य', साप्ताहिक दिल्ली, 1 मार्च 2009 से साभार

नो वेकेन्सी प्लीज़

-अश्विनी कुमार

लगता है भारत ने वह मौका गंवा दिया है जो पिछले वर्ष 2008-09 का बजट रखते हुए तत्कालीन वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम् को मिला था। विश्व में आर्थिक मंदी का दौर श्री चिदम्बरम् के पिछले साल 2008 में डावोस विश्व आर्थिक सम्मेलन के समय से ही गहराने लगा था मगर वित्त मंत्री तब तक यह मानने को तैयार नहीं थे कि इस मंदी का असर भारत पर भी पड़ेगा। वह केवल एक ही रट लगाए हुए थे कि मुद्रास्फीति जरूर चिंता का विषय है और इस मोर्चे पर हमें कारगर कदम उठाने पड़ेंगे। **मगर शुरू से ही लग रहा था कि जिस भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ने की शान हमने अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के रहते हुए बघारी उसके चरमराने से पड़ने वाले प्रभावों को टालने के लिए समय रहते इंतज़ाम नहीं किया और अब श्रममंत्री श्री आस्कर फर्नांडीस खुद घोषणा कर रहे हैं कि कम से कम पांच लाख लोगों की नौकरियां जा चुकी हैं, अभी और भी जा सकती हैं।** ये नौकरियां मुख्य रूप से आई.टी., ऑटोमोबाइल, टैक्सटाइल, हीरे-जवाहरात उद्योग में है। ये क्षेत्र निर्यात मूलक हैं। क्या यह हमारी घनघोर विफलता है कि हम इस तरफ से आंखें मूंदे रहे ? **जब इस देश में मंहगाई बढ़ रही थी तो प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री पूरी ताकत से चिल्ला रहे थे कि अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में खाद्यान्न और कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने की वजह से भारत के घरेलू बाज़ारों में दाम बढ़ रहे हैं।**

श्री चिदम्बरम् संसद में घोषणाएं कर रहे थे कि अरहर की दाल का उत्पादन म्यांमार से लेकर अन्य निर्यातक देशों में भी मांग के अनुरूप बहुत कम हुआ है और हमे अपनी मांग को आयात द्वारा पूरा करना पड़ रहा है इसलिए इसके दाम आसमान छू रहे हैं। हमने मोटे चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। हमारी अर्थव्यवस्था की विकास वृद्धि दर थोड़ी कम ज़रूर हो सकती है। हमने देखा कि **मुद्रास्फीति की दर अब 13 प्रतिशत से गिर कर पांच प्रतिशत के करीब ज़रूर आ गई है मगर घरेलू बाज़ार में उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें तेज़ी के दौर में जहाँ थीं वहीं हैं।** दूसरी तरफ हमारे बैंकों की वित्तीय स्थिति कार्पोरेट सैक्टर में मंदी चलने की वजह से खराब हुई है, जिसे हमने नकद रोकड़ा की समस्या कहा। तीसरी तरफ हमारे शेयर बाज़ारों में तूफानी बिकवाली का दौर चला। विदेशी वित्तीय संस्थानों ने जमकर माल बेचा। **अगर शेयर बाजार को पैमाना माना जाए तो भारतीय कार्पोरेट सेक्टर की पूंजीवत्ता घटा कर आधी रह गई क्योंकि इसका जो संवेदी सूचकांक 20 हज़ार हुआ करता था अब 9 हज़ार के आसपास भी बमुश्किल घूम रहा है।** यह सब पिछले वर्ष 28 फरवरी को बजट पेश करने के समय के आसपास से होना शुरू हुआ था। **मुझे नहीं मालूम कि हम कौन से अर्थशास्त्रियों का गुमान कर रहे हैं, जिन्हें इतना तक पता नहीं चला कि जब अमेरिका और पूरा यूरोप आर्थिक मंदी के चक्र में फंसने पर त्राहि-त्राहि कर रहा है तो भारत की वह अर्थव्यवस्था जिसे इन महानुभावों ने खुद दुनिया से जोड़ा है, कैसे अलग-थलग रह सकती है। जिस अर्थशास्त्री में आने वाले समय की चाल की दस्तक देखकर कारगर कदम उठाने की अक्ल और ताकत न हो उससे तो एक गांव का महाजन भला जो बरसात के मौसम में बादलों की गड़गड़ाहट से ही अंदाज़ा लगा लेता है कि इस बार वह किसान को किस रेट पर रकम देगा। हमारे यहाँ तो ऑक्सफोर्ड और विश्व बैंक से सर्टिफिकेट लिए हुए अर्थशास्त्री बैठे हुए हैं। पिछल बजट को पेश करते समय हमारे पास स्वर्ण अवसर था कि हम अपनी अर्थव्यवस्था को घरेलू मांग में वृद्धि करके उत्पादन बढ़ाते।** इसके लिए ज़रूरी था कि कार्पोरेट सेक्टर को अपने मुनाफों में थोड़ी कमी करनी पड़ती मगर उत्पादन बढ़ने से दुतरफा भरपाई हो सकती थी। एक तो रोज़गार में कमी न होती और दूसरे दौर में भारतीय

उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति के अनुरूप वे भारतीय बाज़ारों में छा जाते। इससे हमारे बैंकिंग उद्योग के कारोबार पर भी असर नहीं पड़ता। इसके लिए मौद्रिक व राजकोषीय उपाय एक साथ उठाकर कार्पोरेट सेक्टर व निर्यात मूलक (आईटी सेक्टर को छोड़कर) क्षेत्रों तक में उत्पादन को बरकरार रखा जा सकता था मगर पहले तो हमारे वित्त मंत्री चिदम्बरम् साहब नकारने की मुद्रा में ही रहे कि हम पर विश्व मंदी का असर ज़रूर पड़ेगा। तब उन्हें माननीय डॉ. मनमोहन सिंह ने समझाया कि नहीं असर जरूर पड़ेगा और वह पड़ने भी लगा है। ऐसे महौल में जो परिणाम निकल सकता था वही निकल रहा है। हमारा वित्तीय घाटा साल के खत्म होते-होते दो प्रतिशत से बढ़कर पांच प्रतिशत हो गया है। **मनमोहन सरकार बड़ी शेखी बघार रही है कि उसके राज में प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 38 हज़ार रूपये वार्षिक हो गई है मगर यह नहीं बता रही कि प्रति व्यक्ति ऋण भी बढ़कर 30 हज़ार रुपये वार्षिक का हो गया है। क्या हम कर्ज लेकर घी पी रहे हैं।** मगर दु:ख तो इस बात का है कि जिस आदमी के नाम पर मनमोहन सरकार सत्ता में आई थी उस पर कर्ज तो अमीर आदमी के बराबर का चढ़ा है मगर आमदनी उसकी अपेक्षा में कम ही हई है। आमदनी में तो टाटा, बिड़ला और अम्बानी की आय भी एक मज़दूर की आय के साथ शामिल है मगर इस देश ने जितना कर्ज लिया है उसे सभी सवा अरब लोगों में पूरी 'ईमानदारी' के साथ बांट दिया गया है। अब जब अंतरिम बजट विदेश मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी ने पेश किया है तो सब चिल्ला रहे हैं कि यह क्या हो गया। हुआ तो वही है जो पांच साल से चली आ रही नीतियों की बदौलत हो सकता था। श्री मुखर्जी इस जंगल में लगी आग को बुझाने की कोशिश ज़रूर कर रहे हैं मगर उनका क्या करेंगे जो आग लगाने का सामान पैदा करके गए हैं।

'पंजाब केसरी' दिल्ली, 22 फरवरी 2009 से साभार

पाठकों के विचार

1. गौरव घोष के नवम्बर 2008 के अंक में "पंथ निरपेक्षता : उद्भव, अर्थ और प्रयोग" पढ़ा। इसका जो अंश पृष्ठ 7 पर 'पंथनिरपेक्ष या धर्मनिरपेक्ष' शीर्षक के नीचे है वह पढ़कर दु:ख हुआ। संविधान के हिन्दी पाठ के प्रकाशन की गाथा मैंने अपनी पुस्तक 'विधि की शब्दावली और विधि का अनुवाद' में एक अध्याय के रूप में दी है। **इसके अनुवाद का पूरा श्रेय राजभाषा खंड, विधायी विभाग का है।** तत्समय मैं राजभाषा खंड का प्रभारी था, अपर सचिव के रूप में। डॉ. सिंघवी को तो यह पता भी नहीं होगा कि हम प्राधिकृत पाठ तैयार कर रहे हैं।

ब्रज किशोर शर्मा

सेवानिवृत्त अपर सचिव, भारत सरकार

पूर्व अध्यक्ष, प्रतिलिप्यधिकार बोर्ड तथा नेशनल बुक ट्रस्ट

एम-103, धर्म अपार्टमेंट, 2 इन्द्रप्रस्थ विस्तार, नई दिल्ली-92

2. यह कैसी विडम्बना है कि भारत के मुसलमान व उनके तथाकथित सहयोगी दूसरे देशों में आहत हो रहे मुसलमानों से आहत होकर बार-बार आन्दोलनकारी बन जाते हैं। परन्तु जब अपने देश के हिन्दू बन्धुओं को कश्मीर में मार-मार कर भगा दिय जाता है, उनकी बहन-बेटियों का बलात्कार करके शील भंग किया जाता है, उनकी करोड़ों-अरबों की संपत्ति को माले गनीमत समझकर लूट लिया जाता है, तो वे क्यों मौन रहते हैं?

अभी दिल्ली के जामिया नगर मे गाजा पट्टी पर इजराइल द्वारा किए गए जवाबी हमले में फिलिस्तीनियों की दुर्दशा को चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाकर दिखाया गया है। तात्पर्य यह है कि विश्व के किसी भी कोने में अगर मुसलमान प्रताड़ित होता है तो भारत के मुसलमान 'इस्लाम खतरे में है' का नारा देकर मज़हबी कट्टरता का घिनौना प्रदर्शन करने से नहीं चूकते। पिछले दशक में अमेरिकी राष्ट्रपति सीनियर बुश ने तथा पिछले वर्षों में राष्ट्रपति बुश ने जब-जब इराक पर आक्रमण किया तब-तब भारत में मुसलमान व उनके तथाकथित सहयोगियों ने जगह-जगह आन्दोलन किए तथा कुछ स्थानों पर सांप्रदायिक दंगे भी भड़काये। इसी प्रकार जब सन् 2006 में डेनमार्क के एक कार्टूनिस्ट ने पैगम्बर मोहम्मद का चित्र छपवाया तो उसके विरोध में भी हमारे देश में आन्दोलन व सांप्रदायिक दंगे हुए।

लगभग पिछले दो दशकों से लगातार जेहाद के नाम पर आतंकवादी पूरे देश में असहाय व निर्दोष लोगों का बम विस्फोटों द्वारा लहू बहाए जा रहे हैं परन्तु कभी भी कोई मुस्लिम संगठन तथा उनके तथाकथित सहयोगी जेहादियों का विरोध करने का साहस नहीं करते। क्या हिन्दुओं के साथ मानतता दिखाना जिहाद के विरुद्ध है और विदेशों में पीड़ित हो रहे मुसलमानों का पक्ष लेना जेहाद है। अगर ऐसा है तो फिर राष्ट्र की परिभाषा क्या है ? राष्ट्रनिष्ठा क्या है? क्या मज़हब राष्ट्र से बड़ा है? अनेक प्रश्न उठते हैं कि क्या भारतवासी जेहाद के नाम पर अपने-अपने घरों से भागते रहें और लुटते रहे। पर किसी को मानवता का बोध नहीं, क्यों? फिर क्यों कहा जाता है कि "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना" तथा आतंकवादी का कोई मज़हब नहीं होता।

विनोद कुमार सर्वोदय,
नयागंज, गाज़ियाबाद

3. हमारी सशक्त परिवार व्यवस्था सदा से राष्ट्र की उन्नति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। इसी में शैशवावस्था की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, चाहे वह माता-पिता और दादा-दादी की स्नेहसिक्त गोद हो, चाहे जीवनोपयोगी गुणों का विकास। यहीं से बाल्यकाल में कुछ ऐसे संस्कारों का बीजांकुर होता है जो बड़े होने पर उसके समक्ष अपने राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परिवार में ही व्यक्ति एक आदर्शोन्मुख जीवन जीता हुआ गृहस्थ एवं वानप्रस्थ काल में अपने कर्तव्यों का वहन करता हुआ राष्ट्र के लिए समर्पित नागरिकों का निर्माण करता है। हमारे भारतीय परिवारों में बच्चे अनुशासन, समरसता, त्याग तथा प्रेमभाव आदि गुणों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करत हैं। इसी मे अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का ज्ञान पाते हैं, सुसंस्कृत आचरण सीखते हैं, ज्ञान के प्रति जिज्ञासु बनते हैं, त्याग और तप के मार्ग पर चलना सीखते हैं। यहीं से उनके हृदय में पूर्वजों के प्रति आदर का भाव जगता है, राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता आती है, व हृदय में राष्ट्रीय मानबिन्दुओं और पूर्वजों के इतिहास के प्रति आस्था बनती है, यहीं से वह पुण्यभूमि भारत को नमन् करता है। भगवान् राम की मर्यादाएं, लक्ष्मण और भरत सा भ्रातृत्व, देवी सीता सा त्याग और निष्ठा, श्रवणकुमार सा सेवा भाव, प्रह्लाद की भक्ति, दुर्गा की शक्ति, द्रौपदी का संकल्प, धर्म और अधर्म के प्रति विवेक आदि अनेकानेक गुण हमारी परिवार व्यवस्था देने में समर्थ हैं जो आगे चलकर सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सहायक होते हैं।

परन्तु आज के युग में एक ओर परिवार व्यवस्था चरमरा रही है तो दूसरी ओर कभी जगद्गुरु कहलाने वाला यह भारतवर्ष मानों बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है। इसके समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। जन-जन के हृदय में संवेदनशीलता की कमी आई है, अराष्ट्रीय तत्त्व सिर उठा रहे हैं। आज शासकों और प्रशासकों के मन में कर्तव्यभाव का अभाव हो रहा है, स्वार्थ एवं पदलोलुपता बढ़ रही है। राष्ट्रीयता के आधारभूत सभी तत्त्वों, जैसे - धर्म, संस्कार, संस्कृति, भाषा, इतिहास पुरखों द्वारा स्थापित मान्यताएं एवं परंपराएं आदि का ह्रास हुआ है। समाज में अनेक प्रकार की भ्रांतियां गहराई से जड़ें जमा चुकी हैं जैसे - आर्य बाहर से आए, भारत कोई राष्ट्र नहीं था इसे तो अंग्रेज़ों ने एक कर दिया, सभी धर्म समान होते हैं, देववाणी संस्कृत मृतभाषा है, अंग्रेज़ी से ही उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। आज शक्ति के पुजारी इस राष्ट्र में हिंसा और शक्ति के अर्थों में अंतर नहीं समझाया जाता, विद्यालयों में गौरव इतिहास नहीं पढ़ाया जाता। हम अपने राजाओं के पराक्रम और दिग्विजय की गाथाओं से अनभिज्ञ हैं। हमें तो यही घुट्टी पिलाई जाती है कि हम तो सदा लुटते-पिटते ही रहे। यदि हमें एक सुदृढ़ एवं समर्थ राष्ट्र का निर्माण करना है तो विद्यालयी शिक्षा पर निर्भर न रहकर घरों, परिवारों में ऐसे नागरिकों का निर्माण करना होगा जो परिवार से प्राप्त गुणों को राष्ट्र निर्माण में साधन बनाएं जो अपने राष्ट्र की आंतरिक एवं सीमावर्ती सुरक्षा के प्रति चिंतित हों, जिनके लिए यह राष्ट्र भोग भूमि नहीं अपितु धर्मभूमि और पुण्यभूमि हो, जो धर्म, संस्कार एवं संस्कृति की रक्षा कर सके।

डॉ. शशिबाला
नयागंज, गाज़ियाबाद
टिप्पणी : डॉ. शशिबाला प्रख्यात विदुषी हैं और ओजस्विनी वक्ता हैं।

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : गोरक्षा–राष्ट्र रक्षा : गो सेवा–जनसेवा

लेखक का नाम : श्री गौरीशंकर भारद्वाज

प्रकाशक : सुरुचि प्रकाशन, केशवकुंज,
झण्डेवाला,
नई दिल्ली–110 055

पृष्ठ : 75

मूल्य : 38 रुपये

भारतीय नस्ल की गायों के प्रति पिछली अनेक दशाब्दियों की उपेक्षा और उनके स्थान पर विदेशी यानि जर्सी गायों को लाने के जबरदस्त अभियान के बाद अब देश के कृषि वैज्ञानिकों, कृषि विशेषज्ञों और पशु पालन से संबंधित अधिकारियों को यह बात समझ में आ गई है कि हिन्दुस्थानी प्रजातियों की गायें भले ही दूध कुछ कम देती हों किन्तु उनका दूध और उससे निकलने वाला घी, उनका मूत्र और गोमय ये सब पदार्थ औषधि के समान हैं। यदि कोई हिन्दुस्थानी गाय कम दूध देती है तो उसके बछड़े और बछड़ियां और उससे प्राप्त होने वाला गोमूत्र और गोमय का भली प्रकार उपयोग औषधियों के रूप में और गोबर गैस बनाकर किया जाए तो गाय पर होने वाले खर्च की न केवल पूर्ति हो जाती है बल्कि एक गाय हमें बहुत कुछ देती है। गाय की उपस्थिति मात्र से रोगों का निवारण होता है, वातावरण की शुद्धि होती है और अनेक कीटाणु और विषाणु विलुप्त हो जाते हैं। इन सब पहलुओं को व्यवस्थित रूप में प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री गौरीशंकर भारद्वाज ने अपनी पुस्तक में तर्क सम्मत ढंग से प्रस्तुत किया है।

लेखक ने इसे ग्यारह अनुक्रमों में विभाजित किया है जिनमें गो महिमा, गौरक्षा, भ्राँति निवारण, गोमांस भक्षण के भीषण परिणाम, गोरक्षा अभियान, भारतीय गायों की प्रजातियाँ, स्वास्थ्य रक्षा व चिकित्सा में गोवंश का योगदान, गो सेवा तथा राष्ट्रीय गोवंश आयोग की सिफारिशें आदि का गंभीर विवेचन किया है।

डॉ. गौरीशंकर भारद्वाज शुभ प्रशंसा के अधिकारी हैं तथा उनका यह संदेश घर–घर में पहुँचाने की आवश्यकता है –

सुरभि न कटें, न अनाज घटें
सुख–भोग डटें,
दिन फेर पिता, वर दे सविता
हम आर्य करें भूमण्डल को।

पुस्तक का नाम : सामाजिक समरसता दर्शन

लेखक का नाम : डॉ. विजय सोनकर शास्त्री

प्रकाशक : सत्साहित्य भंडार, ए–157 बी,
अशोक विहार, फेज–2,

नई दिल्ली

पृष्ठ : 240 मूल्य : 350 रुपये

भारत में प्राचीन काल से ही सामाजिक समरसता का विशेष महत्त्व माना गया, इसलिए इसकी ओर निरंतर लोक का ध्यान आकर्षित किया जाता रहा है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि आप सबका संकल्प, अन्त:करण, मन समान हों, जिससे एक साथ मिल कार्य करें –

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: ।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति:।।

(मंडल 10 सूक्त 191 मंत्र 4)

अथर्ववेद में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि ऊपर उठना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है –

"आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्"।।

परन्तु शास्त्र लेखन की परंपरा शिथिल होने के कारण कुछ स्वार्थियों ने समाज में असमानता के बीज बो दिए जिसकी ओर विद्वानों ने ध्यान नहीं दिया।

डॉ. विजय सोनकर शास्त्री जैसे भारतीय संस्कृति के निष्णात् विद्वान् का इस ओर ध्यान गया है। उनकी हाल में प्रकाशित 'सामाजिक समरसता दर्शन' पुस्तक पाठकों का इसी ओर ध्यान आकर्षित करती है।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय आठ अध्यायों में वगीकृत है।

प्रथम अध्याय में सामाजिक समरसता दर्शन के सिद्धांत और महत्त्व, द्वितीय अध्याय में हिन्दू जीवन दर्शन, तृतीय अध्याय में हिन्दू समाज का प्रकृति जन्य लक्ष्य और भेदभाव रहित स्वभाव, चतुर्थ अध्याय हिन्दू लोक जीवन और सामाजिक समरसता संस्थाओं का विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय भारत की सामाजिक समरसता की विखंडना के इतिवृत्त पर प्रकाश डालता है। षष्ठ अध्याय हिन्दू समाज में व्याप्त औचित्यहीन भेदभाव, सप्तम अध्याय में हिन्दू संस्कृति एवं साहित्य की दुर्भावना पूर्ण विवेचना तथा अष्टम अध्याय में वर्तमान परिस्थितियों में भारत में सामाजिक समरसता की आवश्यकता और सर्वांगीण विकास की दिशा के संबंध में प्रकाश डाला गया है। तदनंतर 'उपसंहार' में प्रस्तुत विषय का विहंगावलोकन किया है। इस प्रकार यह पुस्तक भारत में सामाजिक समरसता की समग्र दृष्टि और उपादेयता की विवेचना करती है। इस उत्कृष्ट ग्रंथ के लिए डॉ. सोनकर शास्त्री साधुवाद के पात्र हैं।

समीक्षक : डॉ. रामशरण गौड़

Review Article

How did India lose its wealth and prosperity

-G.C.Asnani

Bharatvarsh Hindustan was once known through out the world for its prosperity, wealth, science and art obtained through agriculture, technology and industrial production. The material prosperity was supported by high level of spirituality and ethical behaviour prescribed by Sanatana Hindu Dharma. Where did all this vanish two major development altered the course of Indian History- (1) Christianity in the west displaced varies of Hinduism from Europe and north Africa. However, it directly attacked Hindustan in 17th/18th century onwards. (2) With the rise of Islam Muslim made savage attacks carrying mass destruction, forcible conversions of Hindus, driving hordes of Hindu women to Arabia. A soft and civilised society was overcome by the barbarians of the West.

Yet, India as a whole did not become poor instill the British decided to make Indian economy and production of wealth totally dependent on England.

How did they perform this operation, has now been traced in the records available in the Library of London Shri Dharma Pal (1922-2006) collected the authentic material from this library which is now available in collected writings of Shri Dharma Pal in 5 Volumes.

The Britishers decided to make Indian economy and production of wealth totally dependent on England. How they performed this operation is traced in the records available in the Library of London. Late Shri Dharampal (1922-2006) collected authentic authoritative material from this library of London, which is now available in *Collected Writings of Shri Dharampal in 5 Volumes*:

Vol - I : Indian Science and Technology in the 18th Century.

Vol - II : Civil Disobedience in Indian Tradition.

Vol -III : The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the 18th Century.

Vol -V : Essays on Tradition, Recovery and Freedom.

Preface to Vol I is written by Claude Alvares who did his Ph.D. in Holland on History of "Indian and Chinese Science and Technology". He was amazed and inspired by the work of Shri Dharampal and the subject of Indian Science and Technology. *We reproduce this Preface titled: "Making History" by Dr. Claude Alvares on how the British government first through East India Company and then directly by itself ruined the economy of India and distorted the history of India itself.*

Preface

Making History - Claude Alvares

My encounter with the *amazing historical work of Dharampal* came about in 1976 in a most unexpected place: a library in Holland. I was at that time investigating material for a Ph.D dissertation, part of which dealt with the *history of Indian and Chinese science and technology*.

Then one morning, I walked into the South East Asia Institute on an Amsterdam street and found a book called *Indian Science and Technology in the Eighteenth Century* on the shelf. I took it down, curious. It was by a person named *Dharampal* whom I had not heard of before as a person or scholar active in that area of research. I took the book home and devoured it the same day. *It altered my perception of India forever.*

Now, more than twenty years later, I know that the book appears to have had a similarly electrifying effect on thousands of others who were fortunate to get a copy of it. It spawned a generation of Indians which was happy to see India thereafter quite differently from the images with which it had been brought up in school particularly English medium school.

The book also provided a firm anchor for the section of my dissertation dealing with Indian science and technology. The dissertation was eventually published in 1979 with the rather academic title: Homo Faber: Technology and Culture in India, China and the West: 1500 to the Present Day. (*Reissued as *Decolorising History: Technology and Culture in India, China and the West: 1500 to the Present Day*, Other India Press, 1997.)

Today, Dharampal's work is quite extensively known, far beyond the PPST Group, not just among intellectuals and university professors, but also among religious leaders including swamis and Jain monks, politicians and activists. One of the most impressive off-shoots of his research has been the organisation of the bi-annual Congress on Traditional Sciences and Technologies. Three such Congresses, organised by the PPST and institutions like the IITs, have so far been held, generating an impressive wealth of

primary material. Dharampal himself had been invited to deliver lectures *and literally hundreds of commodities.*

Indian economy and society pulverised

As he recorded all this, Dharampal also saw how it was all being undermined, *how the British in fact went about pulverising the Indian economy and society.*

As he studied the sometimes fascinating, sometimes cruel record, practically very day, it held him as if bewitched. He found that *the British* successfully initiated an intricate system of widespread control and extortion, taking away as system of widespread control and extortion, *taking away as tax most of what the land produced, as well as the products of manufactures.* He found it horrifying that this was often done *at the point of the bayonet.*

According to Dharampal, the British purpose in India, perhaps after long deliberation during the 17the century, was never to attempt on any scale the settlement of the people of Britain or Europe in India. It was felt that in most regions of India, because of its climate, temperature range, gifted, industrious and dense population, the settling of the people of Europe would serve little purpose.

Therefore the *purpose was defined as bringing to Britain and Europe, surplus products of the varied industry of the people of India, and the taxes imposed on this industry.* Such a proposal, in fact, was very clearly *put forward* around 1780 by Prof. *Adam Ferguson* of Edinburgh. Ferguson was a professor of moral philosophy. (Interestingly, he is also regarded as the founder of British sociology.)

East India Company

While discussing the mode of governing India, *Ferguson* raised the question of the *purpose of this governance.* According to him, *the aim was to transfer as much as possible of the wealth of India to Europe.* And this task, according to him, could not directly be conducted by servants and institutions of the British state. They would be too bound by rules and state discipline to do justice to the task. The transfer of wealth to Europe, he felt, would generally require the bending and breaking of rules as no major extraction or extortion from the ruled could be effectively done through instruments of the state. He therefore felt that the direct governance of India should be in the hands of the servant of a body like the E.I. Co., where the servants could when needed disobey orders and rules. But the company should be controlled and supervised by a high-power body constituted by the state. It is this logic and arguments that eventually led to the formation of the Board of Commissioners for the Affairs of India in 1784.

Dharampal found that for long periods in the late 18th and the 19th centuries, *the tax on land in many areas exceeded the total agricultural production of very fertile land.* This was particularly so in the areas of the Madras Presidency (comprising current Tamilnadu, districts of coastal Andhra, some districts of Karnataka and Malabar). The consequences of the policy were easy to predict: in the Madras Presidency, one third of the most fertile land went out of cultivation between the period 1800-1850. In fact, as early as 1804, the Governor of the Madras Presidency wrote to his masters (the President of the Board of Commissioners) in London:

We have paid a great deal of attention to the revenue management in this country… the general tenor of my opinion is, that *we have rode the country too hard, and the consequence is, that is in a state of the most lamentable poverty*. *Great oppression* is I fear exercised too generally in the collection of the revenues.

Indian civil resistance an iron clad response

Of course, Dharampal also found within the same archives information about the *Indian civil resistance in various regions of India* in the early stages of British rule, like the one in Varanasi region around 1810-11 and in Canara around 1830, and how they were contained. But such events are not taken note of in the formal record as deliberate policy. Even petitions against grievances, though invited, would not be officially recorded unless the wording of the petition conveyed a sense of the petitioner’s humility and of his (or her) limitless respect for authority.

It is on this account that in selling estates the habitations of the proprietors are excepted from the sales. Therefore, the operation of this tax infringes upon the rights of the whole community, which is contrary to the rights of the whole community, which is contrary to the first principles of justice…

… It is difficult to find means of subsistence and the stamp duties, court fees, transit and town duties which have *increased tenfold*, afflict and affect everyone rich and poor and this tax, *like salt scattered on a wound*, is a cause of *pain and depression to everyone* both Hindoo and Mussulman; let it be taken into consideration that as a consequence of these imposts *the price of provisions has within ten years increased sixteen fold.* In such case how is it possible for us who have *no means of earning a livelihood to subsist?…*

By their methods of *extortion and other similar means, the British were able to smash Indian rural life and society by about 1820-1830.* Around the same period, the extensive *Indian manufactures met a similar fate.* Because of deliberate British policy, the famed Indian village communities so eloquently described by Thomas Metcalfe around 1830, and by Karl Marx in the 1850s, had mostly ceased to exist.

Indian knowledge society a threat to the British

Similar comments could be made about the narratives on Indian science and technology. Initially they were desired for their contemporary relevance and usefulness to the advancement or correction of their British counterparts. But soon after the British began to rule and control Indian life and society, the continuity of Indian knowledge and practice seemed to them a threat. Therefore it was something to be put aside *so that it crumbled or decayed.* Dharampal found that such a programme of 'making extinct' was contrived in practically every sphere of human activity, including the manufactures of cotton textiles, the *production of Indian steel, and even the Indian practice of inoculation against small pox* as early as A.D. 1800.

The British archival records that one becomes aware of the extensive nature of the education network, as well as its speedy decay in the Madras and Bengal Presidency, and somewhat later in the Presidency of Bombay and in the Punjab. Of course, the view which we get from such archival material is splintered and not integrated. But the indicators in themselves are of great value. They also provide us glimpses of pre-British life and of aspects of India's society of which we had lost track from about A.D. 1850 *when society was broken up and suppressed,* and an imposed alien system of education made us ignore and forget the innumerable accomplishments of our people.

Uses of history

Dharampal is quite clear and explicit on the uses of history. He writes:

If we investigate these records on similar aspects further, on the basis of what is available in our archaeological, inscriptional and other historical sources, and what is still retained in the memory and consciousness of our people, we ought to be able to reconstruct our social and cultural past, and hopefully to mould our state and society accordingly.

When Dharampal started on this monumental work around 1965-66, he had felt then that whatever these British accounts might tell us, and howsoever incompletely, they would help us if we followed them up with further detailed and intensive explorations of such material as exists in India. Further, with the association of our own people in the exploration-in most things, still linked with their past and with much more vivid memories of it-we should, within a generation or so, begin to reconstruct our earlier life and society, linking this with our present circumstances and needs. It is distressing to note, though, that we are yet to undertake this task. Dharmpal writes further:

Since 1947

Today, we feel encircled by hostility-much of it in fact *generated by our own ineptitude and actions.* From around 1947, we have treated ourselves as cousins of the West. Dominated by the West, it may be necessary at the moment to rely on Western knowledge and products. But this can only be a short term proposal. Very soon, whatever Western know-how or products seem essential to us, we must learn to produce them in our own way, with our own material, variations and modifications.

Looking ahead

In the meanwhile, however, *we must set our ordinary people free; remove the obstacles in their path relating to use of their local physical and material resources, and encourage them to use their talents to rebuild their own shattered worlds in their own various ways* (even, if required, by withdrawing those laws

and rules which tend to block whatever they attempt, and keeping our advice and criticism to ourselves). Only then can other local relationships and linkages begin to come alive; societal manners and memory pertaining to specific activities begin to get *awakened*; and the rebuilding not remain a mere copy of the past. By taking account of the world around it, Indian society will begin to integrate such elements of Western of or other technologies that seem to it as relevant and stimulating for its own base. For all this to happen, *a profound alteration in our attitudes towards our people and our past* has to take place. We must enable our people to feel more self-assured, confident, hopeful, proud of their talents and capacities, and encourage them *to regain* their individual and societal *dignity*.

To achieve this state, they need to acquire a better awareness-especially as children and youth-of the human past of their localities, and to establish friendly relations with other beings including all kinks of animal life and plants, rivers, lakes, ponds, hills, forests, soil, etc. which coexist with man. Similarly, we should begin to be aware of the linkage of each and every locality with the immediate region, of the region with the country, and of our country with other countries on this earth, and the earth's linkage with the cosmos.

These efforts *would require new texts* of well told stories of localities, regions, countries, the world, and the various ideas about the beginning or non-beginning of the universe. Such knowledge and awareness would make our people feel confident and well informed and also enable them to partake of the Indian understanding of life and of natural phenomena.

It would also ground them in the elements of various sciences and technologies in agriculture, animal husbandry, forestry and language. Thus, by about the age of fourteen, our children-boys as well as girls-would have become competent citizens of their respective areas.

All histories are elaborate efforts at myth-making. Therefore, when we submit to histories about us written by others, we submit to their myths about us as well. Mythmaking, like naming, is a token of having power. Submitting to others' myths about us is a sign that we are without power. *After the historical work of Dharampal, the scope for myth-making about the past of Indian society is now considerably reduced.*

If we must continue to live by myths, however, it is far better we choose to live by those of our own making rather than by those invented by others for their own purposes, ourselves as an independent society and nation.

'Islamic Republic of Pakistan' by 2020 in India

New Delhi, Jan.6 : Pakistan's Inter-Services Intelligence (ISI) apparently has plans to destabilize India by influencing developmentsin the north and west of the country, particularly in Mumbai, as part of its multi-pronged strategy.

Terrorists arrested in Jammu have made these revelations.

According to an article published in the latest issue of the Power Politics magazine, the ISI has circulated two maps to the Pakistan Army to boost troop morale by giving them a target to destabilize India by 2020.

One of the maps targets North India, and projects a desire to convert that region into 'Islamic Republic of Pakistan' by 2020. It mentions South India as disputed territory and treats Bangladesh, Sri Lanka and Nepal as its neighbouring countries. he other map indicates a drastic change of Mumbai's topography, turning the metropolis into 'Muslimabad' by 2012.

The magazine carries the photographs of Jaish-e-Mohammad (JeM) activist Ghulam Fareed, identified as Pakistani soldier, (Belt No 4319184, 10 Azad Kashmir Regiment) from Ruperi village in Pakistan-occupied Kashmir's (PoK's) Bhimber district and the other two—Mohammad Abdullah from North-West Frontier Province (NWFP) and Mohammad Imran from Dera Nawab in Pakistan's Punjab—belonged to Harkat-ul-Jehad (HuD) terrorists group. They travelled from Karachi to Dhaka to enter India from Kolkata and they landed at Jammu from there

The write up further states that according to the plan, ISI has been attempting to place India under seige both from the sea and land routes simultaneously.

Pakistan has moved its army to forward areas in Lahore strengthening international border and LOC with India to protect its vital installations.

The article, written by a Kashmir expert, carries both maps to substantiate the revelations.

The Islamisation of Bharat is on their card for a long time. According to a website named Mughalistan, India will be a Islamic country soon. Here is an excerpt of the text given below their website.

We Muslims are not going to go to Pakistan as the Brahmins command. Instead we will break India once more and re-unit with our brethren in Pakistan and Bangladesh to form the greatest nation of the world Mughalistan , "The Land of Mughal-Muslims". Mughalstan is "Greater Pakistan", or "Pakistan no.2". In other words, Mughalstan is "India's Bosnia" - a nation within a nation. Mughalstan will Inshallah consist of the following conterminous territories:

1. PAKISTAN comprising Punjab, Afganistan, Kashmir and Sindh

2. BANGLADESH or Greater Bangladesh, comprising modern Bangladesh, Southern Assam and the surrounding Muslim-dominated regions.

3. KHALISTAN, the Sikhs Nation of Sufi Muslims. The Sikhs or Nanakshahis are followers of the Muslim Sufi saint Nanak Shah; hence Khalistan is a natural part of Mughalstan.

4. ROHILSTAN northern Utter Pradesh of "Rohilkhand", with a 60% Muslim population.

5. MALWASTAN or Malwa in Madhya Pradesh.

6. BIHARISTAN comprising the Muslim-dominated region formerly known as "Madadha" in southern Bihar, and of course.

7. KASHMIR, the Crown of Mughalstan.

Courtsy: Hindu Voice, Mumbai, Feb. 2009

Why Hindus are angry at Muslims in India?

Kaleem Kawaja has writthen a letter titled "Why Hindus are angry at Muslims in India," published in the India Tribune of August 2, 2008. Here is my response to him.

Hindus have not just one but one million reasons to be angry at Muslims in India. Let me list only a few of them for Mr. Kawaja's kind-hearted understanding, even though I believe Mr. Kawaja is deliberately acting to be ignorant of the reasons behind this Hindu mindset and the history – past and present. So, I will try to make it as simple and as clear for him as possible… and, for all those 'secularists' and Leftists who pretend to be naive just like Mr. Kawaja.

1. First of all, Hindus hold Muslims responsible for the vivisection of their country that they consider as their MOTHER. Hindus adorably call it Bharat-Mata, Matru-Bhoomi, Puniya-Bhoomi, Dharma-Bhoomi, Swarag-Bhoomi, etc.

2. Hindus cannot understand why the Muslims are still living in India. It is a well-known fact that in 1946 elections, more than 90% of the Muslims voted for the breakup of the greater India and the creation of a Muslim land called Pakistan. Despite getting their Muslim land – believe it or not – only 15% Muslims left for the Pakistan and 85% of them stayed put in India. Hindus really want all these Muslims living in India to leave Hindus alone in their country.

3. Hindus are upset that Muslims are having a cake and want to eat it too. Thus, Hindus can see that Muslims have opened a separate bank account for Muslims in Pakistan and Bangladesh, while they are operating a joint bank account with Hindus in India. This is not right and absolutely unfair. Hindus do not want to share the India with Muslims.

4. Again, at the time of Partition of India in 1947, there were 20% Hindus and Sikhs in Pakistan. Now there are only 1% or so. In 1947 there were more than 30% Hindus in East Pakistan (now Bangladesh), at this time there are only 8% Hindus there. Hindus want Muslims to explain what happened to all those Hindus. Hindus are absolutely unhappy about the ethnic cleansing of Hindus in Pakistan and Bangladesh.

5. Conversely, during the same period the Muslim population in India has been rising with leaps and bounds. Muslim numbers in India have risen from 9% in 1951 to 15% now. Hindus abhor this. In the

unprecedented rise of Muslim population in India, Hindus clearly see a mortal threat to their very existence as Hindus. They see this as a conspiracy to breakup and divide their country all over again.

6. Hindus simply will never be able to forget the massive scale of rapes, murders, loot and mayhem let lose by Muslims on the peaceful Hindus in Kashmir and the vicious ethnic cleansing in their own country.

7. How can Hindus forget massacre of our 35 Sikh brothers at Chattisinghpora in the State of Jammu and Kashmir in year 2000, an attack on Jammu and Kashmir State Legislature in October, 2001, another attack on the India's National Parliament in December 2001, yet another attack on the American Cultural Center in January 2002, the roasting alive of 56 women and children in February 2002 at Godhra Railway Station in Gujarat State, the killing of more than 30 members of families of Army personnel in May 2002, serial bomb attacks on passenger trains and public places in the country's financial capital Mumbai on August 2005 that killed 46 people and injured 160, another devilish attack on the Hindu religious place, the Akshardham Temple in September 2002 – 29 individuals including 16 women and four children killed, the butchering of Hindus in Mau in State of Uttar Pradesh, the Delhi bomb blasts in October 2005 – 70 people killed, massacre of Gujjars in Doda and Udhampur, in State of Jammu and Kashmir in May 2006, a second series of Mumbai train bomb blasts in July 2006 – 200 people dead, a separate series of bomb blasts in Lucknow, Varanasi, Jaipur, Ahmedabad and Bangluru – hundreds killed.

8. While Hindus in Jammu agitating for the legitimate rights of Hindu pilgrims in Amernath raise the slogan of Bharat Mata ki Jai, the Muslims in Srinagar, to the great mortification and chagrin of Hindus, wave green flags of Pakistan and openly raise the slogans of Pakistan Zindabad (long live Pakistan)! This treacherous behavior of Muslims is unacceptable and outrageous to Hindus and causes a serious heartburn to them.

9. Recently, in a shocking disclosure, India's National Security Advisor, M.K. Narayanan while talking to newsmen in Singapore disclosed that 800 terrorist cells are operating in the country. These home grown terrorists are none other than the Indian Muslims who provide shelter, guidance, financial assistance and other infrastructure facilities to the terrorists to kill more and more Hindus and destabilize Indian economy. Hindus have every reason to express their indignation and angst at this blatant anti-national activity.

10. All Kashmiri Muslims are doing roaring business all over India. There are Haj Houses all over the country. But the Muslim leaders are openly and repeatedly declaring that they would not give "an inch of land" in Hindu India to Shri Amarnath Shrine Board. What an act of ingratitude!

11. Hindus simply cannot erase from their memory the Great Killings of Calcutta on August 16-17, 1946 in which more than 5,000 Hindus were butchered by Muslim fanatics supported by the Muslim Chief Minister of Bengal. Hindus also vividly recall the genocide of 5,000 unarmed Hindus in Noakhali in Bengal State around the same time. Hindus simply cannot forget the beastly brutalities perpetrated by the West Pakistani Muslim military establishment on the East Pakistan Hindus during the Bangladesh uprising in 1971. Events like these are unparalleled in the history of humanity.

12. Describing the unimaginable capacity of the Muslim mind to conduct the dance of devil, Mr. A. Ghosh, the celebrated author of book "Kafir and Quran," writes: "In many cases a whole community (of Hindus in East Pakistan) was encircled. Mothers and daughters were raped on a mass scale, in presence of brothers or fathers. Breasts of elderly ladies were chopped off. Pregnant women were disemboweled; infants' heads were smashed on the floor. Then followed the chopping off of genitals, gouging out of eyes, and on and on and on. As a grand finale, everybody was put in a house and the house was set on fire."

13. Hindus also remember very well as to how the Sikh Guru Arjun Dev was made to sit on a hot plate over the raging fire and the hot sand was poured over his body… until he died. Hindus and Sikhs will never be able to forget as to how another Sikh Guru, Teg Bahadur Saheb, was murdered in cold blood by the Muslims because he refused to convert to Islam. Hindus remember the two young sons of the last Sikh Guru, Gobind Singh, who were bricked alive by the Muslim ruler, as they refused to embrace the Islam.

14. For the information of Mr. Kawaja, listed here are only a few of the Muslim militant organizations that preach hatred and violence against the Kafirs… principally the Hindus, Sikhs, Jains and Buddhists… and are working overtime to establish Nizame-Mustafa (the Islamic domination) in India: (1) Muslim Volunteer Force, (2) Islamic Revolutionary Front, (3) Islamic Liberation Army of Assam, (4) Jamait-e-Islami, (4) Hurriyat Conference, (5) Jamit-al-Quran Hadis, (6) Tamilnadu Muslim Munnetra Kazhagam, (7) Al Ummah, (8) Islamic Movement of India, (8) Student Islamic Movement of India (the notorious SIMI), (9) Islamic Youth Center, (10) Jihad Committee, (11) Muslim United Liberation Tigers of Assam, (12) Muslim Liberation Front of Assam, (13) Al Huda, (14) Jehad, (15) Tehreek-ul-Mujahideen, (16) National

Democratic Front, (17) Mili Parliament, (18) Indian Muslim Mohammadi Mujahideen, and (19) Indian Mujaheden. The principal aim of all the above groups is the annihilation of Hindus.

15. Hindus in India and the Indian subcontinent have witnessed an unprecedented continued chain of barbarism by Muslims in the last 1400 years. In 712 A.D., the then Governor of Iraq sitting two thousand miles away from the Indian capital Delhi, ordered the Iraqi Muslim ruler in India to bring about the destruction on unbeliever Hindus (unbeliever: the Hindus that do not believe in Islam) if they did not accept Islam. The historical chronicles tell us that in the merciless slaughter that ensued, 26,000 Hindu men were murdered and 20,000 young Hindu girls were enslaved and dispatched to Khalifa in Baghdad.

16. Akbar was the slaughterer of Hindus. Jahangir, in his autobiography "Tarikh-i-Salim Shahi" wrote that under Akbar and Jahangir "five to six hundred thousand (over half a million) Hindus were killed." (Tarikh-i-Salim: Translated By Price, pp. 225-6). In Akbar's military conquest of Chittor in the State of Rajasthan, Abul Fazl recorded that "on Akbar's orders, eight thousand Rajput warriors were first disarmed and then slain; along with them forty thousand peasants also were slain." (The Islamic treatment of PoW, Surah 8, Ayat 67, the Quran) (Akbarnama by Abul Fazl translated into English by H. Beveridge)

We can go on and on and on… with the never-ending saga of Muslim misdeeds against the Hindus. Hindus may not have readily available with them the specific details of the each one of the above acts of extreme Muslim brutality. The Hindu 'secular' leadership also takes extreme pains to ensure that the endless tails of Muslim atrocities… against the Hindus… do not get recalled, remembered, written, memorialized, entered in history books, or spoken from the public platforms.

But the naked truth is that the painful wounds of Muslim savagery, treachery, betrayal, deceit, dishonesty, disloyalty, duplicity… on the naïve Hindu psyche… are too numerous to count and too deep to heal.

These painful sores of history – the distant past and still ongoing – have traumatized the Hindus so much and for so long that they just cannot be healed, nor can their memory be completely erased from the Hindu subconscious mind. Hindu mind will continue to be haunted and tortured at the slightest glimpse of the classic pattern of Muslim dishonesty and betrayal.

Does Mr. Kawaja need any more reasons, any more examples, to explain why Hindus don't trust Muslims and why they appear to be angry at Muslims?

Courtsy: Hindu Voice, Mumbai, Oct. 2008

Whose nation is this?

P. Ananthakrishan

Is this mine?

Before I answer this question, let me list those whose nation this doesn't seem to be.

Delhi, according to the DDA, has about 1,50,000 people without a roof over their heads. They are hounded by the police and thugs on a daily basis. They do not know what a nation is.

Again, Delhi has more than 2,50,000 Central Government employees, an overwhelming majority of them of the so-called 'non-gazetted' category. They commute, collectively, millions of miles to reach and get out of their offices. They live in far away colonies, their houses little more than hovels. Ask them the question. The answer you get will surprise you. In between these two bands, there are millions who lead a precarious existence in this great city. They have no time for pondering over nationhood.

Let us move westward. According to one survey, 55 per cent of Mumbai's population will count as homeless. If you are homeless, you are naturally nation-less.

Tamil Nadu is the most urbanised of Indian States and Chennai is its icon. I recently visited a blog which has this description of one of Chennai's many 'servant-maids': "Vijaya works at three or four different middle class households, earning approximately Rs 300 per month in each. Vijaya spends between 30 and 60 minutes at each of the houses she cleans twice a day, once in the morning, and once in the evening. This totals up to an eight hour day. Her income adds up to Rs 15,000 per year, and although her

husband earns as well, her family income would qualify her to be at or at least close to the official definition of poverty — $1 per day.”

She currently lives in a seedy place and the blog laments that even this will become unaffordable for her in the days to come. She may not consider this as her nation.

One Kolkata journalist recently crowed to the Atlantic Magazine, “Forget Mother Teresa, think IT and young people with disposable income.” Unfortunately, Kolkata cannot boast of many with disposable income. All of them are therefore to be forgotten. It will be ridiculous to claim nationhood for forgotten people.

Whose nation is this?

In the just-concluded Indian Economic Summit, the Finance Minister pleaded with the barons of industry to cut prices. “Hotels must cut tariffs, airlines must cut prices, real estate companies must cut rates of apartments and homes they sell,” he said.

The industrialists were not impressed. One of the leading members of India’s fabulous club of billionaires, whose sector’s profit margin last quarter was a shockingly measly 49.6 per cent, considered this request preposterous. “The prices have already been cut”(perhaps from Rs 1,00,000 per square foot to Rs 99,999 per square foot?), he said in a tone of annoyance. “The Government should ensure that the interest rate is reduced to seven per cent.” The Government, I am sure will relent. Already the newspapers are agog with rumours of steep rate cuts. This is surely the nation of this esteemed billionaire.

The other day I was watching a show of realtors. One from the audience posed this question to a leading realtor: “I am searching for a two bedroom flat within the city and a decent flat costs Rs 1 crore or more.” The realtor was shocked. “Your expectations are unreasonable. How can you get a decent flat in the city at a cost lower than Rs 1 crore? This is Mumbai and not Jhumri Tilaiya,” he seemed to mumble. The realtor seemed to belong to this nation.

I was wondering. The President of India draws a salary of Rs 1 lakh per month. Even if she saves her entire salary for the five years she is in office, she will have only Rs 60 lakh. She can never own a flat in Mumbai. She may get one in Jhumri Tilaiya, if the prices remain stable.

Does she belong to this nation?

A few months ago, there was a news item that made a big buzz for a few days and was promptly forgotten. It was about Swiss bank accounts.

The news reports went as follows: “Surprisingly, India — still regarded as a poor country by many — has US$ 1.5 trillion in Swiss banks, which is more black money than the rest of the world combined. This is thought to be unaccounted money earned in India by inappropriate means as otherwise any Indian citizen or corporation wishing to open a bank account abroad has to take permission from the Reserve Bank of India and records do not show any such permissions granted for deposits in Switzerland. A 2006 report of the Swiss Banking Association claims Indians are the biggest depositors of black money in banks located in Switzerland.”

The nation surely knows who these account holders are. It is evidently happy about them. The nation belongs to them.

Is this my nation?

I am in a better position than the President of India. I may not be able to afford a flat in Mumbai, but I think I can do better than Jhumri Tilaiya. I am an aspiring citizen of this nation.

Courtsy: The Pioneer, New Delhi, 23 Nov. 2008

Diary of Events

December 1 **Union Home Minister Shivraj Patil has left behind a dubious legacy of 70 serial blasts and terror attacks across seven States in the last seven months that claimed over 400 lives. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.***

_________ A group of Islamist bigots has damaged a landmark sculpture in Bangladesh calling it "un-Islamic", a month after another right-wing group vandalised an under-construction monument in the country, the police said. *The Tribune, New Delhi, p. 15.*

_________ Unsigned printed posters threatening the BJP, VHP and RSS from going ahead with their proposed December 25 Orissa bandh around Bhubaneswar and a handwritten postcard was sent to former Union minister Bhakta Charan Das threatening him over his opposition to Vedanta Alumina. Both - the posters and the letter - were purportedly from the Maoists. *The Indian Express, New Delhi, p. 17.*

December 2 The RSS has called for a serious and renewed approach to tackle the menace of terrorism. Sangh Karyavah Mohanrao Bhagwat said that major "systemic and attitudinal changes" have to be brought in to deal with terrorism. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ Pakistani Taliban commander Hakimullah Mahsud warned that the Taliban would - and could - attempt to take over Peshawar, Hangul and other towns and cities in Pakistan if the present rulers of the country failed to change their pro-US policies. *The Metronow, New Delhi, p. 16.*

December 3 The RSS has defended BJP vice-president Mukhtar Abbas Naqvi, who created a political storm with his lipstick remark, saying his sentiments were justified. The Sangh said Naqvi's sentiments against the protesters who took potshots at politicians following 26/11 were justified but he should have been careful in choosing words. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ The terror strike on Mumbai was actually a plan hatched by "Hindu Zionists" and "Western Zionists", including the Mossad, said a self-styled Pakistan security expert on a Pakistan news television show, uploaded on www.hotklix.com. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Counting many elements, including terrorism and nuclear weapons, in Pakistan as causes of international worries, former US secretary of state Madeleine Albright described it as "an International Migraine". *The Mail Today, New Delhi, p. 7.*

_________ Amid heart-rending scenes, thousands of fearful Israel mourners dressed in black and chanting hymns bid an emotional farewell to the six Jews who fell victims to the deadly Mumbai terror strikes. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

December 4 Nepal's deposed King Gyanendra is reported to have said that his China card brought his downfall, indicating that it was a move that angered India. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

December 6 BSF jawans, guarding the border along the Western region, spotted the hawk in Jaisalmer town and were intrigued by a "strange thing" protruding from the bird. A close study found that it was fitted with battery-run transmitter and an antenna. The visiter was from Pakistan. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

December 7 "Hinduism is eternal and only humane religion and so is *Bhagwadgita*," This was the crux of speeches delivered by scholars, saints and socio-religious leaders on

the opening day of the three-day seminar on *Bhagwadgita* and universal brotherhood". The first-ever international seminar on *Bhagwadgita* scholars and religious leaders from various parts of the world, including intellectuals from countries like Afghanistan, Korea, Italy, Israel, Nepal, the US and the UK, participated in it. Scholar Mohammad Hamid Khan said the word "Allah" had been derived from Sanskrit. *The Tribune, New Delhi, p. 7.*

December 11 The CBI charged the Knanaya Catholic Church in Kerala with organised efforts to destroy evidences and derail the probe in the case pertaining to the murder of Sr Abhaya, a nun of the Church, in 1992. The investigating agency told the Kerala High Court. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

December 12 Asking government to take "effective steps" to curb terrorism, opposition BJP argued that the UPA government should stop "running" to US hoping for support in tackling Pakistan-backed menace. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

December 16 Law Minister H.R. Bhardwaj told the Rajya Sabha that there were 2.5 crore cases pending in subordinate courts. Of these one-fifth were in Uttar Pradesh. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 17.*

December 17 **Modi, 'effortlessly' painted Congress party in "true colours" and labelled it "125-years-old weary party" not fit enough to deal with the menacing "threat of terrorism". He said Congress is busy doing "mujra" than taking some action. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.***

December 20 **Union minister for minority welfare A R Antulay, who has kicked up a furore with his remarks on the circumstances leading to Mumbai ATS chief Hemant Karkare's death along with three of his top aides, found strong supports from the top *Shia* and *Sunni* clerics in Uttar Pradesh. *The Times of India, New Delhi, p. 13.***

_________ India conveyed to Iran that it was deeply disappointed by the way the country had reacted to the Mumbai terror attacks. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

December 22 Canadian astronomers have rejected the new 'void models' that say the earth is near the centre of a region of the universe which is almost empty. The universe is expanding because of some inexplicable mysterious or dark energy," Zibin said. *The Pioneer, New Delhi, p. 13.*

December 23 Smitten by the beauty of a neighbour's wife, a Kuwaiti billionaire made a proposal to her husband asking him to divorce his wife for a payment of 50,000 Dinar. The girls husband rejected the offer, but asked for 1,00,000 Dinar instead, which the billionaire thought to be excessive. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

December 24 Shiv Sena chief Bal Thackeray did not approve of the candlelight vigils that some 'nalayak' (useless) people organised near Gateway of India in the wake of last month's terror attacks. He said burning candles was no answer to terrorism. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 10.*

_________ Ashok Singhal International President of V.H.P. said the term "Hindu terrorism" was a coinage of Congress president Sonia Gandhi. He said it was not necessary to have extremists among Hindus as the country had a 10 lakh strong Army (to fight a war with terrorism). *The Indian Express, New Delhi, p. 5.*

_________ The Pope has said that “saving” humanity from homosexual behaviour is just important as saving the rainforests, a comment likely to provoke a furious reaction from homosexual groups. *The Indian Express, New Delhi, p. 17.*

December 25 Air Marshal P K Borbora, air officer commanding-in-chief (western Air Command), said that India “has identified and can hit 5,000 targets in Pakistan” in case of a war with that country. In case of a war, IAF can react instantly and cause maximum damage to it. “A war is still the fourth and last resort. War is declared only after the first three options-diplomatic solution, appeal to the international community and track-II diplomacy fail,” he said. *The Times of India, New Delhi, p. 2.*

_________ According to an account of Bruce Riedel, a former Bill Clinton aide. Pakistan prime minister Nawaz Sharif did not even know that the nuclear arsenal was being operationalised. The firing of a nuclear capable missile was another step in the same direction. *The Times of India, New Delhi, p. 3.*

December 27 The police have detained 59 people in Tibet on charges that they sought to foment unrest by spreading ethnic hatred and by downloading and selling banned songs. The detainees, none of whom were identified, are accused of acting at the behest of the Dalai Lama, the exiled spiritual leader whom the government blames for encouraging separatist sentiment in heavily Tibetan areas. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

_________ “The murder of an Uttar Pradesh officer for not paying hefty donation for the birthday of Uttar Pradesh Chief Minister has shocked the country. Manoj Gupta’s murder has once again proved that Mayawati’s regime is no better than the Mulayam Singh dispensation. If one is to use Mayawati’s parlance, one is *sanpnath* and the other is *nagnath,*” said Javdekar. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

_________ The BJD-BJP government in Orissa is closing in on Congress Rajya Sabha member and former civil servant Radhakanta Nayak for his “alleged role in the conspiracy to kill Lakshmanananda Saraswati.” The Vishwa Hindu Parishad (VHP) has alleged that the plot to kill Lakshamananda Saraswati was “hatched in the presence of Nayak.” *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

December 28 India has received intelligence inputs saying that China has secretly resumed assistance to Pakistan’s civilian nuclear programme. The report has also been corroborated by Western intelligence agencies. A possible follow up to the visit of Pakistan President Asif Ali Zardari to Beijing on October 18. Foreign Minister Shah Mahmood Qureshi had later said that China had agreed to set up two atomic reactors the Chashma-3 and Chashma-4 and that the Pakistani-China Joint Atomic Commission would meet soon. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 7.*

December 29 Political scientist Samuel Huntington, whose controversial book “The Clash of Civilizations” predicted conflict between the West and the Islamic world, has died at the age of 81. Huntington divided the world into rival civilizations based mainly on religious traditions such as Christianity, Islam, Hinduism and Confucianism and said; competition and conflict among them was inevitable. *The Tribune, New Delhi, p. 1.3*

December 30 Noted artist Manjit Bawa, who revolutionised the Indian painting scene with bold use of vibrant colours, after a prolonged illness. The 67-year-old painter from Punjab’s Dhuri area was in coma for the past three years after suffering a stroke. *The Tribune, New Delhi, p. 1 11.*

December 31 Hindu outfits are up in arms against the New Year celebrations in many hotels in the city, alleging that the organisers were making money at the cost of Indian morals and culture. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

_________ BJP it consolidated its majority in Karnataka by winning five of eight assembly seats while Congress failed to trouble the scorers and HD Deve Gowda's JD(S) stayed afloat after begging three constituencies. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

January 1 Awami League chief Sheikh Hasina, who favours strong ties with India, vowed not to allow Bangladesh's territory to be used for terrorism against its neighbours, two days after her grand alliance swept the country's first general election in seven years. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

January 2 The Indian Railways proposal to increase the number of berths in long-distance trains by adding an extra one in the passage of AC-3 tier and sleeper classes is to be dropped midway in view of a large number of complaints from passengers. The proposal already under implementation will have to be stopped midway. *The Indian Express, New Delhi, p. 9.*

January 3 RSS leaders and BJP top brass have decided in favour of a "better coordination" in the run-up to the Lok Sabha poll, as the latter announced to declare most of its candidates for the mega event by month-end. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

January 5 A number of people in the Capital staged protest at the Embassy of Nepal to protest against the removal of the Indian priests from the famous Pashupatinath Temple. *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

_________ Some 100 Maoist cadres attacked the Pashupatinath temple caretakers who were protesting appointment of local priests in place of Indians, injuring 10 people in their latest assault on the shrine. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

January 6 A nude portrait allegedly resembling Lord Shiva was withdrawn from an exhibition at Jehangir Art Gallery after protests by a little-known NGO, the Hindu Janajagruti Samiti. The work, by Delhi-based artist Nitai Das, was forcefully removed from the gallery after eight 'activists' (including one woman) from the NGO forced Das to remove four other paintings featuring nudes. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

January 7 The Himachal Olympic Association (HOA) hailed the decision to repeal the controversial HP sports (Registration and regulation of Sports bodies) Act and thanked the Government for giving added incentives to sportspersons. Act eroded the autonomy of sports organisations and was opposed not only by sports bodies but also by IOA. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

_________ Amidst the growing concern of the Muslim community over the bloodbath in Gaza, Indian Union Muslim League (IMUL), an ally of the Congress-led UPA, has asked the Centre to sever all ties with Israel. All Muslim organisations in the state have stepped up their campaign against Israel and India's ties with it. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

_________ Middle class Pakistanis in scores are now procuring guns and other arms to protect themselves, as a surge in Islamist violence has led to fears that the country may be headed for a wave of violent kidnappings, extortions and other crimes. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 13.*

January 9 **Hundreds of people cried and sang in jubilation as Hindu devotees began a victory march to celebrate the return of Indian priests to Nepal's 17th century Pashupatinath temple and the pledge by the humbled Maoist Government not to interfere in its management. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.***

_________ Ranchi: Jharkhand CM Shibu Soren was trounced by Jharkhand Party's Gopal Krishan Patar alias Raja Peter in the Tamar constituency in Ranchi district. The poll outcome triggered a constitutional crisis in the state. Constitutional experts said the UPA, left red-faced by Soren's defeat. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ With the RSS pledging complete support, the BJP can now approach Lok Sabha election with renewed confidence. In addition to this, the Vishwa Hindu Parishad (VHP) too, has decided to back Bharatiya Janata Party (BJP) in the forthcoming general election. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

January 10 On January 2, Mohan Bhagwat delivered the message to assembled leaders, including Rajnath Singh, M.M. Joshi, Venkaiah Naidu, Arun Jaitley and Sushma Swaraj. He said that they must not lose the sight of the goal of the Sangh "in the interest of the nation". *The Hindustan Times, New Delhi, p. 8.*

January 12 Chinese authorities plan to celebrate Dalai Lama's exit from Tibet by marking march 10, the 50th anniversary of a Tibetan rebellion in 1959 culminating in the Tibetan spiritual leader's fight to India, as anti-slavery day and declaring it a holiday. *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

January 15 **The age-old "guru-shishya" tradition would be strengthened in Himachal known as "Abode of gods", to promote folk art, Chief Minister PK Dhumal said. Under the scheme, the Government would enhance the monthly honorarium of teachers from Rs 500 to Rs 2,000 and the scholarship of pupils from Rs 300 to Rs 500 per month for learning the traditional folk songs, dances and fine art. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.***

_________ Manjit Bawa, who passed away recently, was offered a special tribute by the India Habitat Centre at its Lohri celebrations. The painter had been a major attraction at the past Lohri celebrations there. *The Metronow, New Delhi, p. 7.*

_________ The incoming administration views with great concern the role that Iran is playing in the world. A nuclear-armed Iran is not acceptable to the United States. And it is our job to persuade other countries that it should not be acceptable to them either. *The Tribune, New Delhi, p. 15.*

_________ Chief Minister P.K. Dhumal flagged off the Jan Shatabdi train from Una to Delhi. Dhumal called December 14, 2008, as a golden day for Una district and said usually Shatabdi trains start from the state capitals to Delhi. This train would leave Una at 5 am and reach New Delhi at 12 noon and would start from Delhi at 3 pm and reach Una at 10 pm. *The Tribune, New Delhi, p. 9.*

January 16 **Former Union Health Minister CP Thakur hosted a huge lunch on *Makar Sankranti*, which had BJP brass including LK Advani, Rajnath Singh and Murli Manohar Joshi alongwith media contingent in full-strength present. Thakur's son Vivek, who is BJYM vice-president, said "We celebrate Makar Sankranti as the *Sangh* desires that Indian festivals should be celebrated." *The Pioneer, New Delhi, p. 4.***

January 17 In a move that could help revive higher education in science, the University Grants Commission and the Delhi University have promised to look favourably into a suggestion by three national science academies for starting a four-year

B Sc course after which a student would be able to enrol for a dual M Sc and Ph D courses. Those wanting to opt out a year after enrolling in the dual course would get an M Sc degree. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Thiruvananthapuram: In a major embarrassment to the party, Kannur CPM MP A P Abdullakkutty again praised Gujarat chief minister Narendra Modi's investor-friendly policies. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

January 18 The Dalai Lama, a lifelong champion or non-violence candidly stated that terrorism cannot be tackled by applying the principle of *ahimsa* because the minds of terrorists are closed. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

January 19 In Pannur areas in the northern district of Kannur a CPI-M worker and a Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) activist were stabbed to death in two separate incidents. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 8.*

_________ "While Chinese soldiers can drive right till the border in their vehicles due to their superb roads, our soldiers have to sometimes trek 10-15 km to reach their border posts" said a senior official. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

January 20 The "BJP challenge" to Congress veteran Salman Khurshid in the election to the executive body of the New Delhi-based India Islamic Cultural Centre (IICC) finally proved too costly for him. Incumbent president Sirajuddin Qureshi, with the backing of the BJP leaders defeated the Congress veteran by 502 votes as ever BJP was accused of 'communalising the elections. *The Pioneer, New Delhi, p. 1 & 4.*

January 21 Senior BJP leader and former Uttar Pradesh Chief Minister Kalyan Singh resigned from the primary membership of the party. He also described rejoining BJP five years ago as his biggest political blunder. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

January 23 Foreign minister Shah Mahmood Qureshi has said Pakistan had given a "blank cheque" to China authorising it to negotiate with India on its behalf to deal with the aftermath of the Mumbai terrorist attacks. *The Tribune, New Delhi, p. 18.*

_________ The killing of Laxmanananda Saraswati by Maoists and the riots in its aftermath seem to have caused a sharp division in the rebel ranks, say the Orissa Police top brass. The police are also confused about the emergence of a group called M2, which is calling itself a pro-Hindus Maoist outfit that effected a successful bandh in Kandhamal and two other districts on January 3. *The Indian Express, New Delhi, p. 9.*

January 24 Close on the heels of a power tussle over Nepal's Pashupatinath shrine revered by Hindus worldwide, the Hindu holybook *Bhagavad Gita* has come under attack in the former Hindu kingdom. An ethnic organisation in eastern Nepal has fined two Nepalis for bringing in copies of the *Gita*, which contains the essence of Hindu philosophy. Over 100 copies of the book were confiscated. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ Shiv Sena chief Bal Thackeray has said, "Pakistan is not afraid of India because the fanatic Muslims within our country is the real strength of the hostile neighbour", instead of removing the Islamic tumor that was growing in India's stomach, the present rulers were making it more malignant," he said. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

January 25 In what can be termed Union Health Minister Dr Ambumani Ramadoss long-term vendetta plan, 185 super specialist doctors, mostly from the critical diseases

departments of the All India Institute of Medical Sciences, have been quietly shown the door. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

January 26 Every night around 8 o'clock, the terrified residents of Swat, a lush and picturesque valley a hundred miles from three of Pakistan's most important cities, crowd around their radios. They know that failure to listen and learn might lead to a lashing - or a beheading. "They control everything through the radio," said one Swat resident who declined to give his name for fear the Taliban might kill him. "Everyone waits for the broadcast." *The Times of India, New Delhi, p. 26.*

January 27 A Pakistani Shia political leader was shot dead in Quetta. In a separate incident, six people were killed and more than 20 injured in a bomb blast in Dera Ismail Khan. *The Indian Express, New Delhi, p. 12.*

_________ Assam has banned a book that triggered protests across the State as it allegedly showed Sankaradeva, the most revered 16th century saint-reformer and religious preacher of Assam, in poor light. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

_________ Islamic scholars in India, including those at the Darul Uloom Deoband, say they do not find anything objectionable in Muslims practising yoga. Chanting mantras like Om that have religious connotation, they add, is not necessary for yoga and Muslims can replace them with verses from the Quran or references to Allah. The National Fatwa Council in Malaysia told Muslims not to practise yoga, the ulema in Indonesia asked Muslims to stop yoga while it "studies" this issue. Clerics in Egypt and Singapore too issued similar rulings. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

January 28 Indian Olympic Association said the government has not done justice to sportspersons in regard to the Padma awards and feels Abhinav Bindra should have got "at least the Padma Vibhushan" while Vijender Singh and Sushil Kumar also ought to have been among the award winners. *The Pioneer, New Delhi, p. 16.*

January 29 Obama mentioned Muslim background of his relatives. In his first extensive interview since taking office, president Barack Obama has struck a conciliatory tone toward the Islamic world, saying he wanted to persuade Muslims that "the Americans are not your enemy." *The Mail Today, New Delhi, p. 40.*

_________ Just as people respond better to personal touch, cows also feel happier and more relaxed if they are given a bit more one-to-one attention, say Australian researchers. Interacting with the animal more as it grows up we can not only improve the animal's welfare and her perception of humans, but also increased milk production." *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

_________ What about us? Everyone seems to want the *Padma Shri* for me, but things in India only work for cricketers and movie stars says Saina Nehwal. The world top 10 in badminton. That's the feeling among Olympic medal-winners Sushil Kumar and Vijender Singh, and also Akhil Kumar, who put up a great fight in Beijing. *The Hindustan Times, City, New Delhi, p. 1.*

_________ Taliban have effectively taken over swat valley. It is ironic that what was once part of Buddhist civilisation has now been taken over by fundamentalists intent on wiping out all remnants of the valley's glorious history. The Taliban has also issued a list of people it says it wants to appear before its "court". The list includes prominent politicians of the North West Frontier Province, many of whom belong to the Awami

National party, currently headed by Asfandyar Wali, the grandson of Frontier Gandhi Khan Abdul Ghaffar Khan. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 19.*

_________ The year 2012 is claimed by some with New Age beliefs to be a great year of spiritual transformation. The date marks the end of a 5,126-year cycle on the Long Count calendar developed by the Maya, the ancient civilization known for its advanced understanding of astronomy and for the great cities it left behind in Mexico and Central America. *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

_________ Renowned journalist and editor-in-chief of *The Pioneer* Chandan Mitra has said that the Union Government should spend on infrastructure development in order to meet the challenges of recession. He said that spending on labour-intensive projects would increase opportunities and make people self-sustained. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

January 30 As per the Delhi High Court's January 19 order, they have to ensure *namaz* (prayer) is offered within the boundary of the mosque, situated inside the Aravalli Apartments complex. The residents claimed "the mosque was an unauthorised construction and an encroachment on public land" and sought its removal. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 7.*

_________ "I have seen so much politics in sports that it's (politics) nothing new to me," said ace shooter Jaspal Rana who was given a ticket by BJP to contest in the upcoming Lok Sabha elections from Tehri in Uttarakhand. *The Times of India, New Delhi, p. 30.*

_________ Saudi Arabia has asked India to issue passports to its pilgrims to Mecca instead of issuing 'special passes' for undertaking the journey. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

January 31 He was speaking at a meeting on the occasion of the 84th birth anniversary of Gandhian and noted columnist Padmacharan Nayak. Rajya Sabha member and Editor *The Pioneer* Chandan Mitra said all-out efforts should be made to stop the inroads of commercialism into the Press. "Now land (*zameen*), chastity (*izzat*) and news (*samachar*) are on sale," he said, adding that efforts should be made to curb all these attempts. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

Select Articles

Inflicting wounds on patriotism : M Rama Jois, The Pioneer, New Delhi, December 2, 2008, p. 9.

Hindus world over have remained loyal to the country they live in and have never indulged in any anti-national activities. The term 'Hindu terrorism' maligns the community.

Terror 2.0, How the terrorists used modern technology against a modern city : Ajey Lele, The Indian Express, New Delhi, December 4, 2008, p. 10.

A major flaw in India's anti-terror mechanism is the lack of intelligent investments in counter-terror technology. Even today, the talk is mainly about a numerical increase in the NSG's strength.

Pitfalls of citizen power : Chanden Mitra, The Pioneer, New Delhi December 7, 2008, p. 12.

Probably for the first time since India became a victim of organised terrorism nearly 20 years ago, the affluent classes have been stirred. This is a welcome trend because their articulation and the celebrity status of some of the protagonists undoubtedly helps focus public anger, which has been diffused so far.

India losing stature : Dina Nath Mishra, The Pioneer, New Delhi, December 7, 2008, p. 13.

The Mumbai terror attack has shown us that our political system is still in deep slumber, refusing to accept reality. The Government does not realise that India's stature in the comity of nations has fallen vertically as it has failed to harness terror-mongers.

Nothing will be the same again : Arun Nehru, The Pioneer, New Delhi, December 8, 2008, p. 8.

We have a failure at all levels of governance and this only situation, both at the Centre and in the States. We all become wiser due to hindsight. The facts as they are unfolding are frightening and what we see is not a failure of intelligence but a failure of governance.

A Region in Ferment : Robert D Kaplan, The Times of India, New Delhi, December 10, 2008, p. 20.

Hindu-Muslim relations have historically been tense. Remember that the 1947 partition of the subcontinent uprooted at least 15 million people and led to the violent deaths of around half a million. Given this record, the relatively peaceful relations between the majority Hindus and India's 150 million Muslims has been testimony to India's successful experiment in democracy. Democracy has so far kept the lid on an ethnic and religious divide that, while its roots run centuries back, has in recent years essentially become a reinvented modern hostility.

Our deadly 'dark visitors' : Claude Arpi, The Pioneer, New Delhi, December 11, 2009, p. 9.

The motives of Chinese hackers usually include commercial and military intelligence gathering and the setting up of sleeper spies in the computer networks ready for future strikes. But has he even heard of the 'Dark Visitors'? When it will be too late, a new Minister will probably admit the lapses of his predecessor.

Not terrified of terrorist : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, December 12, 2008, p. 8.

The Assembly election results have come as an opportunity for the beleaguered 'secularists' whose plans to create the myth of 'Hindu terror' were put paid following the November 26 terrorist attack on Mumbai.

Delhi's djinns will haunt BJP : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, December 13, 2008, p. 8.

For both national parties, the glass is half-full. The Congress's creditable victory in Delhi and defeat of a charismatic if divisive Chief Minister in Rajasthan gave it a stronger-than-expected booster shot at a time when the UPA Government looked weak and muddled.

End of an era : Gurmeet Kanwal, The Tribune, New Delhi, December 15, 2008, p. 11.

India is likely to spend over $50 billion on defence acquisitions over the next five years. Among the weapon systems and equipment to be acquired, the big-ticket items will include the aircraft carrier INS Vikramaditya (Admiral Gorshkov), 126 multi-mission, medium-range combat aircraft, six C I 30J Hercules transport aircraft for special forces, eight maritime patrol, surveillance and reconnaissance aircraft - possibly Boeing 737 P-81, six Scorpene submarines, and a large number of main battle tanks (MBTs), 155 mm towed and self-propelled artillery howitzers and equipment for counter-insurgency operations. India should insist on joint development, joint production in future defence acquisitions.

Oh Pakistan! : Muqtedar Khan, The Indian Express, New Delhi, December 17, 2008, p. 11.

Pakistan has become a very dangerous country, and is now a grave threat to its own existence and to the stability and security of South Asia. A fast-failing state limits our options. We must calibrate our response carefully.

It Ain't working : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, December 18, 2008.

The war in Afghanistan and the containment strategy against Iran have only reinforced the US dependence on the Pakistani military, despite mountains of intelligence indicating the latter is playing both sides - bolstering the Taliban and other terror groups while pretending to be a counterterror ally. US should stop propping up the Pakistani military.

Loosening the knot that binds : Anuradha Dutt, The Pioneer, New Delhi, December 19, 2008, p. 9.

Individuals matter more than families in the West where marriage is becoming irrelevant. In India, marriage continues to be the fulcrum of society. Are live-in relationships so common as to justify them becoming legally at par with marriage in the Indian context? The answer would be in the negative, judging by the sanctity enjoyed by the institution of marriage in all communities.

The art of war on terror : Arun Jaitley, The Pioneer, New Delhi, December 22, 2008, p. 9.

The new laws have several loopholes which will hamper both investigation into terrorist crimes and prosecution of terrorists. "The 10 terrorists who shook India on 26/11 have demolished the fundamental assumptions of every critique of a special law against terrorism. Indians will no longer accept India as a soft state vulnerable to terrorism."

Collective irresponsibility : Rajesh Singh, The Pioneer, New Delhi, December 23, 2008, p. 11.

Call it the compulsions of coalition politics, but the need to speak in one voice becomes all the more necessary in a coalition regime. Else we shall continue to have a Government practising collective irresponsibility.

Dark shadow of jihad : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, December 23, 2008, p. 8.

The Afzal-Ajmal cases prove partition was no solution to the British Raj-instigated communal formula, and that the spectre of 1947 will remain with us until we assert our identity as a vibrant Hindu nation that can shrivel its oppressors. A viable Indian riposte will, therefore, have to await the rise of a political leadership that recognises 'secularism' as a dirty word, and does not kowtow to the Western masterminds of our current woes.

Liar, liar pants on ceasefire : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, December 25, 2008, p. 9.

Hamas believes that Western sympathy can be manipulated by increasing violence and blocking solutions to the conflict in a way that will be blamed on Israel. It is the same thing with *jehadies* from Pakistan comminuting terror act in India.

War clouds, nuclear overhang : Gurmeet Kanwal, The Pioneer, New Delhi, December 27, 2008, p, 9.

In the end India's conventional superiority would prevail and a future conflict in the plains may be expected to end on terms favourable to India. Hence, while war is not a rational option, there is no need to fear war and act timidly. India must act in its national interest and not continue to suffer the adverse consequences of Pakistan's interminable proxy war.

Indo-Pak standoff, Eyeball to eyeball : Rahul Datta, The Pioneer, New Delhi, December 27, 2008, p. 11.

In terms of number of major serviceable airports, India and Pakistan both lag way behind other nations. But India has 200 more airports than Pakistan. Placed at 16th in the world, India has 346 serviceable airports as against 146 of Pakistan, which is ranked 24th. The US, having 14,447 airports, leads the pack followed by Brazil (4,263) and Mexico (1,834) at the second and third spot respectively.

Unreal to hope from Pakistan : Swapan Dasgupta, The Pioneer, New Delhi, December 28, 2008, p. 1.

The Good Pakistani is better informed. He has seen the devastation of the Marriot Hotel in Islamabad; he has watched the siege of the Lal Masjid; and he has experienced the growing hold of religious bigots on Pakistani society. He is too painfully aware that Pakistan is sleep-walking its way to disaster. Yet, when it comes to India, ordinary decencies have effortlessly yielded to the brusque message for India: You had it coming. It's likely to be an indefinite wait. In the war on India, the Good Pakistani has invariably sided with a Bad Pakistan. Only the naïve and the foolish should be surprised.

Antulay's perverse conspiracy theory : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, December 30, 2008, p. 9.

Secularism treats everyone as equal. Islam divides humanity into *momins* and *kafirs* or non-believers. The Minority Affairs Minister's comments need to be seen in this context. Mr Antulay knew how unpopular he

would be for his remarks about Hemant Karkare. Yet he did it on the floor of Parliament and with an assertion that he did it with a fear of god in mind. He was not alone in believing what he did. Muslim MPs across party lines endorsed his demand. So did venerable. Syed Shahabuddin. What greater articulation of the Muslim mind do Hindus and Christians require to become aware and educated on the subject?

Pashtuns aren't Iraqis : B Raman, The Pioneer, New Delhi, December 31, 2008, p. 9.

Pashtun society, particularly in Afghanistan, is different from Iraqi society. Hatred of non-Muslim foreigners is very strong among the Pashtuns and the hatred of Pashtuns who are perceived as collaborating with non-Muslim foreigners is even stronger.

Ex-pracharak to be Rajnath's aide : Pradeep Kaushal, The Indian Express, New Delhi, December 31, 2008, p. 3.

Muralidhar Rao who led the Swadeshi Jagran Manch for 15 years; may help Rajnath Singh strengthen ties with the RSS. This is likely to be a great asset to Rajnath Singh who has so far depended on senior RSS leader Suresh Soni to forge stronger ties with the RSS.

Appearance and reality : Rekha Chowdhary, The Indian Express, New Delhi, January 2, 2009, p. 10.

In the article Rekha Chowdhary a political science teacher on Jammu University argues. "It is regional rather than 'communal' response that has resulted in BJPs unprecedented victory." (The reality is the other way round. In the past several decades no regional response could emerge. It succeeded only when Amarnath shrine board was short shrifted. The appearance, according to the author was in fact the reality.)

Pay-offs won't pay : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, January 2, 2009, p. 14.

America's new Afghan strategy could compound problem. "Surge and bribe" is a short-sighted approach intent on repeating the very mistake of American policy on Afghanistan and Pakistan over the past three decades.

Is Hasina-II good news for India? : Udayan Namboodiri, The Pioneer, New Delhi, January 3, 2009, p. 9.

Going by inherited wisdom we must rejoice every time a 'friendly' regime takes over in Dhaka. Hasina let us down before, but now we may have a new Hasina.

RSS sees Manmohan govt as anti-Hindu and weak : Diwakar & Rajeev Deshpande, The Times of India, New Delhi, January 4, 2009, p. 11.

RSS sees the Manmohan Singh government as "anti-Hindu" and a week regime on many counts. Rajnath Singh unstinted backing of Hindu radicals accused of the Malegaon bombings and subsequent actions like sharing a platform with Bajrang Dal and VHP were all seen as intended to earn RSS's backing.

Nepal in doldrums, Waiting for bigger turmoil : Dina Nath Mishra, The Pioneer, New Delhi, January 4, 2009, p. 13.

Nepal seems to have gone back to square one wherein property grabbing, extortion and killings have become an everyday affair. The partners in the communist regime seem to be facing differences amidst themselves pointing to another strife in the making.

Remember the Hindu Holocaust : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, January 5, 2009, p. 9.

Islam's *jihad* against Hindustan is a gory record of burnt temples, libraries and entire cities. Millions have been killed over the ages simply because they were Hindus. In the light of Mr Kanchan Gupta scathing column on the defenders of the *fidayeen* who attacked Mumbai ("Mumbai's Butcher and human rights", December 17, 2008) and Ms Sandhya Jain's warning in her article ("Dark shadow of *jihad*, December 25, 2008), it is worth recalling yet again that this *jihad* against India is neither new nor will it stop. It is also imperative to trace what this *jihad* has historically cost India in general and Hindus specifically.

Break with the past? : Daniel Pipes, The Pioneer, New Delhi, January 7, 2009, p. 9.

Count some of the ways things have degenerated:

- **Iran has nearly built nuclear weapons and appears to be planning for a devastating electro-magnetic pulse attack on the United States.**
- **Pakistan is on its way to becoming a nuclear-armed, Islamist rogue state.**
- **The price of oil reached an all-time high, only to collapse due to a US-led recession.**
- **Turkey went from being a stalwart ally to the most anti-American country in the world.**
- **Iraq remains an albatross (or a pair of shoes?) with an immense potential for danger.**
- **Rejection of Israel's existence as a Jewish state has become more widespread and virulent.**
- **Russia has re-emerged as a hostile force in the region.**
- **Democracy efforts have collapsed (Egypt), increased Islamist influence (Lebanon), or paved the way for Islamists to attain power (Gaza).**
- **The doctrine of preemption has been discredited.**

Muslims disunited by personal law : Mohd Shakaib, The Pioneer, Second opinion, New Delhi, January 7, 2009, p. 8.

The Muslim schools of thought still lack vision, and above all, unanimity in matters of personal status. The situation becomes more critical when a woman is made to depend on the whims and fancies of an illiterate panchayat who orders a daughter-in-law to marry her rapist father-in-law. To avoid such farce, Muslims should ponder over accepting a common civil code for a better and healthier society.

Who says Pakistan is a weak State? : Meenakshi Rao, The Pioneer, New Delhi, January 11, 2009, p. 12.

Who says Pakistan is a weak State? It may soon be a non-existent state considering the Taliban are all over it, but it certainly does not resemble a weak State, if, that is, one goes by the way it has tackled the post-Mumbai scenario.

Monumental step for Dogras : Mohit Kandhari, The Pioneer, Foray, New Delhi, January 11, 2009, p. 10.

Mubarak Mandi Complex, which was home to the erstwhile Dogra kings in Jammu, has a history of over 150 years. After facing neglect and administrative apathy, the seat of power is finally undergoing a makeover.

Ministers prefer general category staff : Rakesh Lohumi, The Tribune, New Delhi, January 12, 2009, p. 8.

Human Resources Development Minister Arjun Singh, who has emerged as a crusader for the reserved categories under the UPA regime, has not opted for even a single officer from the reserved category.

Love Palestine? Hate Hamas : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, January 13, 2009, p. 9.

Unless crushed and destroyed, Hamas will help spread the poison of *jihadi Islamism* and terrorism to other countries. Not only non-Muslims, but many Arabs and Muslims elsewhere will suffer if Hamas survives and flourishes. Israel won't be the only victim. This is why the war in Gaza must succeed.

Making Pakistan fall in line : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, January 13, 2009, p. 9.

Our Foreign Minister's parroting that India's patience is running out and that our options are open, which means we may consider going for a war, have by now given Pakistan enough time to prepare itself in a warlike situation. Confirming this, the former Chief of Army Staff, Gen Shankar Roychowdhury, said that there is no scope for a surprise.

Stop water flow to Pakistan : Lt-Gen (retd) Ranjit Singh, The Tribune, New Delhi, January 13, 2009, p. 9.

The experiment of mobilising its armed forces and threatening Pakistan has proved to be a damp squib because of the possession of nuclear weapons by both the countries. Pakistan will react in the way which we want only if our actions, which thought non-violent in nature, have the potential of inflicting costs which are beyond its capacity to bear. The first one is the threat of revocation of the Indus Water Treaty of 1960. The second, we should extend all morale and political support to the various groups fighting for liberation from Pakistan. The third arrow should be the starting of covered operations in Pakistan. The perpetrators of terrorism in India must not be allowed to feel safe in Pakistan or anywhere else in the world.

We must dump Lahore Club : A Surya Prakash, The Pioneer, New Delhi, January 13, 2009, p. 8.

Thought their numbers are dwindling, members of the 'Lahore Club (a bunch of pro-Pakistan do-gooders who always advice India to exercise 'restraint after every Pakistan-sponsored terrorist attack) and some of its offshoots are still around. After lying low for some time when public anger against Pakistan was at its peak in the immediate aftermath of 26/11, these self-styled peaceniks are now crawling out of the wood work and once again thrusting their unsolicited advice on Indians, the Government of India and the political elite in our country, and urging all and sundry to avoid utterances or actions that would hinder the 'peace process'!

The clock is ticking : K Subrahmanyam, The Times of India, New Delhi, January 14, 2009, p. 22.

The US Congressional Bipartisan Commission on the Prevention of Weapons of Mass Destruction Proliferation and Terrorism in its report last month concluded, "Were one to map terrorism and weapons of mass destruction today, all roads would intersect in Pakistan". The US is concerned about Pakistani nuclear weapons falling into the hands of terrorists and becoming a threat to them. Pakistanis assert that their nukes are India-specific. Therefore, there is a mutually of strategic interest between the two countries on the developments in Pakistan.

Prachanda and the temple of doom : Yubaraj Ghimire, The Indian Express, New Delhi, January 16, 2009, p. 13.

Prachanda has perhaps realised that his credibility has nosedived in less than four months. The absence of an official reaction from India in the temple affair is being interpreted in many ways; but Nepal's officialdom un-officially maintains that India's silence is a departure from its past emphasis that relations are based on 'shared culture and religion'. Despite his recent retractions, popular opposition to the PM is at an all-time high.

Uniform marriage laws required : Sudhanshu Ranjan, The Tribune, New Delhi, January 17, 2009, p. 13.

The Supreme Court has been emphasising the need to have a uniform civil code since 1985 when in the famous Shah Bano case it lamented that Article 44 of the Constitution had remained "a dead letter".

I still support Narendera Modi, Kerala CPM MP tells party : V R Jayaraj, The Pioneer, New Delhi, January 17, 2009, p. 6.

CPI(M) Kannur MP and party's Young Turk AP Abdullakkutty, who got the Marxists into a trap by praising the development initiatives adopted by Gujarat Chief Minister Narendra Modi still held Modi as a model fit to be emulated by Kerala in matters related to development.

Age of inexperience : Chandan Mitra, The Pioneer, New Delhi, January 18, 2009, p. 12.

It is time to raise the fundamental question whether youth is necessarily a synonym for excellence or, if experience and maturity are of lesser consequence than age? It is true that most Indian voters are young; that's natural in a country where 65 percent of the population is below the age of 35. But it is pertinent to ask if all youngsters in this country make every decision on their own without the advice and concurrence of their seniors.

Greed & corruption : Dina Nath Mishra, The Pioneer, New Delhi, January 18, 2009, p. 13.

India has become a den of greed and corruption. Be it a man on the street or lawmakers and enforcing agencies, the flight of corruption in the Indian system is stunning, so much so that the country is slipping in a deeper and deeper crisis of character.

Living next door to a serial killer : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, January 19, 2009, p. 9.

Hamas's goal is the destruction of Israel, wiping out its citizens, revolution throughout West Asia, treating women as chattel, and the creation of what it considers to be god's rule on earth.

In battle, sometimes one has to retreat-protégé Rai's advice to Kalyan : Sanjay Singh, The Indian Express, New Delhi, January 22, 2009, p. 3.
According to Kusum Rai, while Kalyan was a big politician, he knew no diplomacy. "In politics, I have worked with him like his shadow. He is a big politician, but not a diplomat," she said. Rai described Kalyan as a simple gentleman and an emotional person.

BJP's Hanuman burns his bridges : Suman K Jha, The Indian Express, New Delhi, January 22, 2009, p. 9.

Once ranked next only to Vajpayee and Advani in the BJP's hierarchy, lately Kalyan's obsession with promoting his son Rajvir and aide Kusum Rai has dominated his politics. "Kalyan came to acquire a halo that was unmatched, something that would probably be rivalled only by Narendra Modi in today's BJP," said a veteran BJP leader. "There were folklores woven around Kalyan then. The faithful regarded him as a reincarnation of Hanuman nothing less. Southern states like Karnataka, the routes of his cavalcades were dotted with women with flowers and *kumkum* in their hands." Once Kalyan hoped to head the BJP; now, he struggles to the notional head of the minuscule group of upwardly mobile Lodh Rajputs in Uttar Pradesh.

Roots of extremism lie in India : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, January 21, 2009, p. 9.
While the Government turns a blind eye to divisive forces, the Muslim league, AMU and Darul Uloom Deoband continue to sow seeds of religious extremism in India. All in all, this situation proves that Mr Abdullah Hasan Haroon is right when he alleges that the ideological root of extremism lies in India and not in Pakistan.

Talking it over : Jaithirth Rao, The Indian Express, New Delhi, January 22, 2009, p. 12.
The army is one of the few places in Pakistan where the lower middle class can look for upward social mobility and individuals of ability without connections can jostle with there elite. It is not an accident that General Kayani is the son of a non-commissioned officer of the army.

An Empty Threat : G Parthasarathy, The Times of India, New Delhi, January 22, 2009, p. 20.
The Pakistani establishment believes that threat of nuclear escalation is the best way to generate diplomatic pressure to deter India from any strong response - diplomatic or otherwise - to terrorist outrage in India perpetrated by ISI-backed groups. But how realistic are such threats of nuclear escalation? Are Pakistan's general who control the country's nuclear weapons not aware of the suicidal madness of any nuclear strike against India?

Preserving national identity : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, January 23, 2009, p. 9.
As long as the Indian collective consciousness preserved the primacy of Vedic national unity, India could be invaded but not broken. And it is to this that we must return to keep India united.

Subhas Chandra Bose-A hero forgotten by the nation : Sujit Sankar Chattopadhyay, The Pioneer, New Delhi, January 23, 2009, p. 9.
Why the British quit- India the most important of which were the INA activities of Netaji Subhas Chandra Bose, which weakened the very foundation of the British Empire in India, and the RIN mutiny which made the British realise that the Indian armed forces could no longer be trusted to prop up the British. When asked about the extent to which the British decision to quit India was influenced by Mahatma Gandhi's 1942 movement, Attlee's lips widened in a smile of disdain and he uttered, slowly, 'Minimal'.

UPA's economic legacy awful : S.L. Rao, The Tribune, New Delhi, January 23, 2009, p. 9.
While the NDA managed to keep deficits under control, the UPA squandered the high tax revenues during the growth years to reach record deficit levels, a strong reason for inflation.
Fissured Pak, whither India? : Ajey Lele, The Pioneer, New Delhi, January 24, 2009, p. 9.
In recent years, Pakistan could be said to be in a state of turmoil. It all started under certain circumstances. What are India's options? India work take advantage of the political fault-lines in Pakistan? India need to look at possibilities of taking advantage of political non-compatibilities within the Pakistan.

Republic of scamsters : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, January 25, 2009, p. 12.
The time has come to review the present structure of the Republic and begin the process of an overhaul. This may call for the establishment of a Second Republic on the French pattern. I shall enumerate my thoughts on its contours soon and await your response.

Slumdog is about defaming Hindus : Kanchan Gupta, The Pioneer, New Delhi, January 25, 2009, p. 4.
In Boyle's film every effort is made to shock and awe the film's audience by taking recourse to graphic and gory portrayal of bloodthirsty Hindu mobs on the rampage - the idiom that defines India as it is imagined by the lib-left Western mine - laying to waste Muslim lives (a Hindu is shown slitting a Muslim woman's throat in an almost frame-by-frame remake of the videotape that was released by the killers of Daniel Pearl). Hindu policemen torturing Muslims by giving them 'electric shock therapy' street children being physically disfigured and then forced to beg, and such other scenes of a medieval society where rule of law does not exist and every Hindu is a rapacious monster eager to make a feast of helpless Muslims.

Republic of scams : Joginder Singh, The Pioneer, New Delhi, January 26, 2009, p. 8.
The Rs 7,000-crore scam that chairman of Satyam Cmputers Services Ramalinga Raju has admitted to has taken the wind out of corporate India. He has disclosed that the company's balance sheets were dressed-up over several years. It is a crime for which he and his brother as well as the chief financial officers of the company have been arrested.

Dealing with Islamist terror : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, January 27, 2009, p. 9.
Hamas and Hizbullah, Iran, Muslim Brotherhood, and even Islamist impersonator Syria, are not persuadable through dialogue. They glory in death and won't rest till they achieve 'total victory'.

Incredulous India : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, January 27, 2009, p. 10.
The Indian Republic is now a mature 59-year-old. Whether it is a world power in the making or just a large subcontinental State with global power pretensions is a moot question. What is beyond dispute is that India, home to more than one-sixth of the human race, continues to punch far below its weight. Internationally, it is a rule-taker, not a rule-maker.

Courting Central Asia : P Stobdan, The Times of India, New Delhi, January 27, 2009, p. 12.
Kazakhstan and India share an old relationship through Buddhist and Sufi links. It needs to be reinvigorated in keeping with contemporary realities to help realise the common objectives of both countries. Nazarbayev's visit should mark the beginning of India's new diplomatic charter in Central Asia. It's a region vital for our geostrategic interest.

Communal attack

Abdul Rehman Antulay has shamed the majority of India's Muslims who believe in the voice of reason and sanity. The Muslim community has condemned his reckless remarks, except for those who have vested interests in destabilising India.

Antulay has no right to speak on behalf of the entire Muslim community. His utterings stem from the fact that he was frustrated at being sidelined both by his own party and the Muslim community and he wanted to do something to gain political mileage with in the orthodox sections of the Muslim community. His ploy may have worked but, in the long run, he will be exposed.

Antulay, as Minister of Minority Affairs for the last three years, has delivered nothing to Indian Muslims. Unfortunately, Antulay has now become a poster boy for fundamentalist Muslim organisations that had earlier discarded him as a good-for-nothing minister.

By default, communal elements are, thanks to the Pakistani media taking up Antulay's words as the gospel truth, now painting all Indian Muslims as being pro-Pakistan. If his statements have not been communal in nature, then nothing is communal.

-Firoz Bakht Ahmed

H.T., N. Delhi, 23.12.08, p.12.

Unsung hero

Apropos Ms Nidhi Sharma and Mr M Madhusudan's article, "The man called Pranab" (January 28), Mr Mukherjee is a man of great ability, acumen and experience. After Mrs Indira Gandhi's assassination he should have been made Prime Minister. Yet he was made to yield space to the inexperienced Rajiv Gandhi. There is also no doubt about the fact that if the Congress comes back to power in the next general election and seeks to put up a new person as the Prime Minister, then Mr Rahul Gandhi will emerge as the frontrunner, not Mr Mukherjee. It is extremely sad that he will remain the perpetual number two, the highest chair continuing to elude him. Mr Mukherjee - the tragic hero of Indian politics - has fallen victim to the typical Indian phenomenon whereby affiliation to a political dynasty is a much greater qualification than merit.

-Kajal Chatterjee, Kolkata
The Pioneer, New Delhi,
January 29, 2009, p. 8.

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशन

पुस्तक का नाम **मूल्य**

1. **विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति** 95.00 *लेखक : श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा*
2. **स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति** 90.00 *लेखक : श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा*
3. **इस्लाम के सैनिक** 20.00 *लेखक : श्री पुरुषोत्तम*
4. **मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाएं** 30.00 *लेखक : श्री पुरुषोत्तम*
5. **तालिबान इस्लाम और शान्ति** 20.00
6. **भारत में पाकिस्तान की आइ.एस.आई.** 15.00 *लेखक.: कर्नल श्याम कुमार,अनुवाद:डॉ. युद्धवीर सिंह*
7. **अयोध्या विवाद का हल :** 20.00 डॉ. सुरेन्द्र
8. **श्रीराम जन्म भूमि सच जानिए !** 140.00
9. **हमारे मूल कर्तव्य** 80.00 *लेखक : डॉ. विजय नारायण मणि त्रिपाठी*
10. **भारत में सेक्युलर राजनीति** 55.00
11. **हिन्दुत्व के स्वर : सत्य के दर्पण में** 75.00 *लेखक : डॉ. कैलाश चन्द्र*
12. **आज इस्लाम के मसले** 65.00 *लेखिका : सुश्री इर्शाद मांझी (कनाडा)*
    भाषांतरकार : मे.ज.(से.नि.)वि.जोगलेकर
13. **The Nefarious Activities of Pak's I.S.I.** 15.00 *लेखक : कर्नल श्याम कुमार*
14. **The Challenge of Truth -**
    Through answers to some F.A.Q. 120.00
15. **FACT - Focussed Awareness &**
    Complete Truth बड़ा आकार (सचित्र) 500.00
16. **The Ayodhya Controversy** 20.00
    Problems&Policy Options 20.00 *Sh. B.P.Singhal*
18. **The Glory that is Hindutva** 10.00
19. Striving for progress of self destruction 10.00. *B.P.Singhal* 20.
    And You shall be set free (हिन्दी-अंग्रेजी) 20.00 *David Icke*